R. S.

वर्ष १ | नवम्बर १९५५ | तरंग ९

❀ प्रार्थना ❀

१—भर्म मिटा दे मर्म बता दे भेद जता दे मन मानी।
राह दिखादे डगर सुझादे प्रेम नगर की मुझे ज्ञानी॥

२—भव सागर अति अगम पंथ है सूझे वार न पारा।
मृग तृष्णा में जीव फंसे हैं उन्हें दिलादे छुटकारा॥

३—काम क्रोध मद लोभ मोह के फंदों से हुई हानि।
छूटन की बिधि कोई न जाने भर्म मर्म में भरमानी॥

४—तीरथ गये एक फल पाया संत मिले तब फलचारी।
सतगुरु मिले अगम फल पाया छुटी जेवरी संसारी॥

५—सागर मथ कर ग्रन्थों का 'शिव' अपने में दर्शादे तू।
और अपने उपदेश की प्यारे जग में धूम मचा दे तू॥

सम्पादकीयः—

ईश्वर ने सब से श्रेष्ठ और अमूल्य रत्न जो मनुष्य को प्रदान किया है वह उसकी स्त्री है। यह वह देवी है जो उसकी सदैव रक्षा किया करती है। स्त्री की निष्काम सेवा और उसकी प्रेम भरी दृष्टि पति के घर को स्वर्ग धाम बना देती है। स्त्री सरस्वती है। वह बुद्धि देने वाली है परन्तु गुरु नहीं बनती। स्त्री पारवती है वह घर वालों को बल देकर बलवान बनाती है। पर पहलवानी नहीं जताती। स्त्री लक्ष्मी है वह खिला पिलाकर सबको संसारी संग्राम के लिये तय्यार कर देती है। पर अहसान के बोझ से नहीं दबाती। स्त्री को बुद्धिदा (अक़्ल देने वाली) बलदा (बल देने वाली) और अन्नदा (खाना खिलाने वाली) कहते हैं। हिन्दुओं में स्त्रियों के यह तीन नाम हैं।

जिस प्रकार आत्मा शरीर के भीतर रह कर उसको चलायमान रखती है। उसी प्रकार स्त्री परदे में रह कर पुरुष और सन्तान को काम काज के लिये तय्यार करके बाहर भेजती है। स्त्री शक्ति है और पुरुष शिव है। यह इन दानों के रूप हैं।

यदि किसी पुरुष ने किसी स्त्री से विवाह किया है या किसी स्त्री ने पति से सम्बन्ध जोड़ा है तो दोनों को उचित है कि वह आपस में सहयोग से रहें और प्रेम धार का दम भरें। एक से दो अच्छे होते हैं। दोनों मिलकर इस प्रकार रहें कि पृथ्वी मंडल उनके लिये स्वर्ग धाम बन जाय। एक नारी सदा ब्रह्मचारी!

यदि किसी पति में अपनी स्त्री का प्रेम नहीं है तो वह निर्दयी, कठोर और कुटिल होगा. ऐसी दशा में उसको जीवन का सुख कहां नसीब हो सकता है। अनमिल बेजोड़ जोड़ी से बुरी सन्तान पैदा होगी। और सारा जीवन कष्ट क्लेश में व्यतीत होगा। न घर में सुख न बाहर शांति।

जिस पुरुष ने अपनी विवाहिता स्त्री को त्याग कर किसी

अन्य स्त्री को दोष दृष्टि से देखा या किसी स्त्री ने अपने पति के सिवाय किसी पर पुरुष से किञ्चित भी सम्बन्ध जोड़ा तो दोनों झूठे, कुटिल, मलीन हृदय और दोषी हो जांयगे और अपने लिये इस संसार को नर्क बनालेंगे।

हिन्दू नारियों के समीप पार्वती जी का इष्ट हर समय रहे। शिवजी नंग धडंग दिगम्बर थे। पारवती जी निश दिन उनकी सेवा का दम भरती रहती थीं। सीता महारानी ने हज़ारों कष्ट सहन किये पर भूल कर भी राम को शिकायत का शब्द उस देवी की जिह्वा पर नहीं आया।

हे हिन्दू स्त्रीयो ! तुम यथार्थ में सती, पार्वती और सीता महाराणी की पुत्रियां हो। पच्छिमी सभ्यता और उसकी क्षण भंगी तड़क भड़क की ओर न जाओ ? तुम्हारा पथ औरों से भिन्न है। तुम्हारा Mission (ध्येय) इस संसार में विशेष प्रकार का है। पतियों के घरों में प्रवेश करते ही तुम पुराचीन देवियों के समान अपने नाम रूप को मेंट दो। पति के नाम से नामवाली बनो। प्रेम की मूर्ति बन कर पति को प्यार करो और ऐसी शक्तिशाली सन्तान पैदा करो जो भारतवर्ष की सेवा के योग्य हो। यही एक तुम्हारा धर्म है। और इसी से भारत का कल्याण होगा।

स्त्री का धर्म महा कठिन है। सती जी ने पिता की वाणी से शिवजी महाराज के विपरीत कुछ अनुचित अपशब्द सुने बोलीं "जिस कान ने पति के विरुद्ध उनकी निन्दा के बचन सुने हैं वह भस्म हो जाने के योग्य है। जिस मन से स्वामी की बुराई सुनकर सहन की उसे भस्म होना उचित है।" और वह उसी क्षण दक्ष प्रजापति के यज्ञ में बेसुध होकर गिर पड़ीं और योगाग्नि से अपने शरीर को भस्म कर डाला। उसी समय से इस पवित्र भूमि में सती होने की परिपाटी हुई।

हिन्दू नारियो ! पति ने तुमको अपना घर सोंप दिया। तुम को भी उचित है कि उसका और उसकी सन्तान का नाम संसार में रोशन हो जाय। तुमको उचित है, चाहे मान प्रतिष्ठा मिले या न मिले,उसकी हविस व्यर्थ है,अपना सर्वस्व पति के अर्पण करदो।

ईश्वर ने स्वयं गुप्त रहकर हमको प्रगट किया है। हमारा धर्म है कि हम आप गुप्त रहकर उसका नाम उजागर करें, रोशन करें यह हिन्दू महिला का धर्म है।

हिन्दू पुरुषो ! तुम्हारा धर्म भी कठिन है। स्त्री को मालिक बनाकर उसकी मान प्रतिष्ठा और प्रेम का दम भरो। उसका कभी जी न दुखाओ। मनु जी का वाक्य है:-पिता, भाई, सुसर, ताऊ और पति सब को उचित है कि धन, आभूषण, वस्त्र, फल फूल, आदि से स्त्रियों की पूजा किया करें। जिस घर में स्त्रियां आंसू बहाती हैं वह शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। घर बार का सुख नितांत स्त्रियों पर ही निर्भर है। जहाँ स्त्री नहीं होती शरीर सुख आलोप हो जाता है।

हमने स्त्री विषय में २५ पुस्तकें प्रकाशित की हैं जैसे:-हमारी मातायें, हिन्दू मातायें, सती व्रतांत, सच्ची मातायें, सच्ची देवियां सच्ची स्त्रियां, राजस्थान की वीर रानियां, राजस्थान की ललित ललनायें, आदर्श भारती, वीरांगनायें, राजवन्ती का विवाह, चित्तौड़ की चढ़ाइयाँ, भारती महिलायें, घर की फिलोसफी, घर की लक्ष्मी, सीता, पारवती, सती अनसूईया, आदि २। अवकाश हो तो इन पुस्तकों को शौक़ से पढ़ो। भला होगा।

हिन्दू स्त्रियों के गुणों को कोई वर्णन नहीं कर सकता। यहाँ आकर वाणी मूक हो जाती है। ईश्वर करे ! हम में तेजस्वी, पतिव्रता और तपस्विनि स्त्रियां पैदा हों ! जिनसे हमारे देश के आराध्य देव गुरु फिर से जाग उठें।

सबसे अधम-नन्दू भाई

राज भक्तिनी मीरावाई

दोहा–नाम रहेगा नाम सौं सुनो सयाने लोग।
मीरा सुत जायो नहीं शिष्य न मूंड़ो कोय॥

कौन जाने यह दोहा किसका है और किसने लिखा है। मगर बात सच्ची है, बावन तोला पाव रत्ती। इसका भाव यह है कि नाम केवल मालिक के नाम लेने से रहेगा। सयाने लोगो इस को सुनो! मीरावाई ने न लड़के पैदा किये न किसी को अपना चेला चेली बनाया। पर उसका नाम अब भी चला जाता है।

मीरावाई के नाम से हमको सदा से प्रेम रहा है। इस राज-भक्तिनी के सीधे साधे बचनों में जादू है। सुनने और गाने वालों में लय और समाधि की अवस्था पैदा कर देते हैं। हमने बार २ अपने कई रिसालों साधू, राजस्थान की वीर रानियां, संत संदेश आदि २ में इनका चरित्र लिखा है। जब २ लिखा नई २ बातें मालूम होती गईं। और पहली बातें अक्सर ग़लत साबित हुईं। अब हमको ठीक हाल मिल गया है, उसके आधार पर यह लिख रहे हैं। आगे नाटक के रूप में दरशाने से प्रथम यह ठीक मालूम होता है कि इस परम पुनीत और पवित्र देवी का इतिहास सूक्ष्म रूप में पाठकों के प्रति उपस्थित करें। जिससे नाटक, पढ़ते समय रोचक और मनोरंजन का विषय बन जाय।

मीरावाई का जन्म

मीरावाई जोधपुर के राठौर वंश से थीं। यह रत्नसिंह की इकलौती पुत्री थी। जन्म भूमि मौज़ा कुड़की [मेड़ता] मारवाड़ में बताई जाती है। छोटी आयु में माता का देहान्त हो गया। उसके दादा दूदा जी ने उसको अपने पास बुला लिया। बड़े लाड़ चाव के साथ लालन पालन हुआ। मीरा स्वभाव की सुशील,

चित्त की उदार, और बड़ी सूक्ष्म प्रकृति की थी। बालपन से ही इसकी कविता में रुचि थी। सरल और सहज स्वभाव होने के कारण उसकी वाणी ऐसी मधुर और मन मोहनी थी कि सुनने वाले चकित रह जाते थे।

भक्ति भाव के प्रभाव पैदा होने के कारण

कहते हैं कि मीरा की माता और उसके गांव के बहुधा क्षत्री क्षत्रानियां रैदास जी भक्त के चेले चेली थे। किसी के यहाँ विवाह था। मीरा भी अपनी माता अथवा अन्य बूढ़ी बड़ियों के साथ उसमें गई हुई थी। भोली भाली! सहज स्वभाव की लड़की! विवाह उत्सव को देखकर अपने संग की स्त्री से पूछा, मेरा विवाह कब होगा? और मेरा दूल्हा कौन है? जवाब मिला कि तेरा दूल्हा गिरधर गोपाल नट नागर है, जिस की मूर्ति पूजी जाती है। मीरा ने उसी समय घूंघट डाल लिया। स्त्रियां उसके इस चरित्र को देखकर हंसी। बात एक मामूली थी। पर यह मीरा जीवन संचार में अति महत्व की सावित हुई जिसके कारण वह भक्ति के रङ्ग में रङ्ग गई। वह भी रैदास जी की चेली हो गई। पर कब? इसका पता किसी इतिहास से नहीं चलता। एक दो भजनों में बेशक इस विख्यात भक्त की शिष्या होने का इक़रार करती है। जिसकी अन्त की कड़ी यह है। "रैदास संत मिले मोहि सतगुरु दीन्हा सुर्त सहदानी।" और जब हम मीरा के भजनों को रैदास जी की वाणी से परस्पर मुक़ाबला करते हैं तो उनमें एक विशेष प्रकार की उपमा प्रतीत होती है। रैदास जी में कृष्ण गिरधर गोपाल की बड़ी भक्ति थी। और वह मीरा के भजनों में भी उसी अनुपात से दृष्टि गोचर होती है।

विवाह

रतनसिंहजी ने उनका विवाह सम्वत् १५७३ विक्रमी में

भोजराज के साथ कर दिया जो राना सांगा का पुत्र था। जोधपुर और उदयपुर के घरानों में इस प्रकार के सम्बन्ध सदा से होते चले आये हैं। राणा का कुल राजपूतों में सबसे श्रेष्ट समझा जाता है। रत्नसिंह ने अपने जी से यह बहुत बड़ा काम किया। लड़की का उदयपुर वंश की पटरानी होना वास्तव में एक अति महत्व की बात थी। उस समय उदयपुर बसा नहीं था। मेवाड़ देश कहलाता था। और चित्तौड़ राजधानी थी। राज प्रथम बड़ा विशाल था। अब वह समय के परिवर्तन से छोटा रह गया है। केवल बारह हज़ार मील का क्षेत्र है। और जोधपुर जयपुर से भी छोटा है। जोधपुर अब राजस्थान में सबसे बड़ा राज्य है। इसका रक़वा ३४ हज़ार वर्ग मील है। विवाह के बाद मीरा अपने पति के साथ चित्तौड़ चली आई। मीरा जैसी भक्निि थी साथ ही पतिव्रता भी थी, सच्ची पति सेवी और सच्ची धर्म परायण।

मीरा का रंडापा।

भोजराज राणा सांगा का उत्तराधिकारी था। पर अफ़सोस है कि अधिक समय तक जीवित न रह सका। कहते हैं वह सम्वत् १५८३ में मर गया। इस दृष्टि से मीरा को विवाह का कुछ सुख नसीब न हुआ। वह बहुत छोटी आयु की थी। दस ग्यारह वर्ष की आयु और रंडापा! सितम है!! सितम है!! सितम !!! हिन्दुओं में बाल विवाह की पृथा बहुत दिनों से चली आ रही है और क्या जाने इसने अनगिनत स्त्रियों के जीवन को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। अब भी इससे छुटकारा नहीं है। उसके दूर करने के यत्न भी निष्फल होते हैं। पर मीरा को तो इस रंडापे के महान कष्ट ने एक असाधारण परम पुनीत और पवित्र भक्तिनि बना दिया। जिसके स्मरण मात्र से ही अच्छे से अच्छे भक्तोंके

शीश भी उसके मान आदर में झुक जाते हैं। पति के वियोग में उसका चित्त अधिकांश भक्ति की ओर लग गया। यह भक्ति भी उसके कुल की परम्परा थी, विशेषता थी। दूदाजी, बीरमजी, जयमलजी यह सब अपने समय के भक्तराज हुए हैं। मेड़तये राजपूतों की सन्तान में अब भी भक्त होते हैं।

रंडापे के समय चित्तौड़की दशा

सम्वत् १५८३ में भोजराज की मृत्यु के बाद राणा सांगा को बाबर के साथ युद्ध करना पड़ा। जिसमें मीरा का पिता रतनसिंह और चाचा रायमल मारे गये। यह राणा सांगा की सहायता के हेतु आये थे। राणा सांगा मेवाड़ का एक प्रतिष्ठित साहसी वीर गम्भीर और बांकासूरमा था। उसने अपने राज्य का विस्तार दूर२ तक किया था। पर भाग्य के साथ कौन लड़ाई कर सकता है। वह बाबर के समीप लड़कर मारा गया। और उसकी जगह सम्वत १५८४ विक्रमी में रत्नसिंह गद्दी पर बैठा। राणा सांगा के चार पुत्र थे। [१] भोजराज [२] रतनसिंह [३] विक्रमाजीत और [४] उदयसिंह। और यह अपनी असावधानी और नादानी के कारण नष्ट होगये। सम्वत् १५८८ में रतनसिंह के बाद विक्रमाजीत राणा हुआ। यह बड़ा अनाड़ी व्यक्ति था। और वह मीराबाई की भक्ति देखकर जलता था। और उसको दुख देने पर तुला रहता था।

मीरा की आपत्ति विपत्ति

रांड़ होने के बाद जो मीरा का भक्ति भाव उमड़ा तो वह खुल्लम खुल्ला साधुओं के सतसंग में आने जाने लगी। यह चलन विक्रमाजीत की दृष्टि में बुरा मालूम हुआ। उसने मीरा पर प्रतिबंध लगाये। पर वह कब मानने वाली थी। उसने अपने उस हाल का वर्णन एक भजन में किया है। जो यहां दिया जाता है।

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई ।
अंखियन जल सींच सींच प्रेम बेल बोई ॥
साधु संग बैठ बैठ लोक लाज खोई ॥
अब तो बात फैल गई जाने सब कोई । मेरे.....

विक्रमाजीत ने चम्पा और चमेली नाम की दो सहेलियों को उसकी देख रेख का प्रबंध करने को सोंपा । पर मालिक की मौज ! वह भी उसके सतसंग के प्रताप से भक्तिनि बन गईं और उसकी सहायक बन गईं ! फिर राणा ने अपनी सगी बहिन ऊदा-बाई को इस काम पर मुकर्रिर किया । ऊदाबाई ने उनके साथ कठोरता का व्यवहार किया । जिसका पता मीरा के उन भजनों से चलता है, जिसको उसने अपनी नन्द से वार्तालाप के समय, वर्णन किया है । [नाटक में यह ज्यों के त्यों दिये हैं] और भी अनेक प्रकार के प्रतिबन्ध लगाये गये पर सब निष्फल साबित हुये ।

सर्प और विष देना

अब राणा ने देखा कि रोक टोक से काम नहीं चलता। तब उसने उसको कष्ट क्लेश देने का काम चार आदमियों को सोंपा । (१) बीजा ब्रिंगी बनिया । (२) एक गूजर (३) एक गौड़ ब्राह्मण और (४) एक दाहमू ब्राह्मण दयाराम । इन चारों ने इस अबला दीन दुखी रांड भक्तिनि को जो दुख दारुण दिये उनको सुनकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं । मारवाड़ में इन चारों की बाबत एक कहावत प्रसिद्ध है:—

बीजा ब्रंगी वाणियां दूजै गूजर गौड़ ।
चौथे मिला जो दाहमू किया टापरो चौड़ ॥

इन नीचों ने पहिले तो फूल के टोकरों में सांप वगैरा छिपा २ कर भेजने शुरू किये । पर मसल मशहूर है "मारने वाले से बचाने वाला ज्यादा बलवान है" मीरा ने इनकी नीयत की

परख करली ठाकुर जी के चढ़ाने के फूलों का प्रबंध अपनी सहेलियों से कराने लगी । तब उन चारों निर्दईयों ने विक्रमाजीत को यों सम्मति दी कि इसको विष देकर काम तमाम कर देना चाहिये, और राणा ने ऐसा ही किया । ज़हर क़ातिल एक प्याले में भरकर दयाराम पंडा के हाथ भिजवाया । और महल की डयोढ़ी पर आकर, एक बांदी को बुलाकर, प्याला भेजा और कहा कि यह चरणामृत का प्याला है, जो खुद राणाजी ने तुम्हारे लिये भिजवाया है मीरा ने सुना, प्रसन्न हुई ! पर ऊदाबाई जो इस षड़यंत्र में फरीक थी बोली, मामी ! यह विष हलाहल है, इसको न पीओ । पर मीरा हँसती रही । जो वस्तु चर्णामृत के नाम से आई मैं उस को कैसे न पीकर कलंक लगाऊं, मैं तो पीऊंगी । होना हो सो हो रह । यह कहा और वह गट गट पी गई ! घड़ी बीती, दो घड़ी बीतीं, आधा घंटा बीता, पर विष का कोई असर न हुआ, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं ! अच्छे योगियों का स्थिती के साथ अभ्यास करने पर इसका प्रभाव नहीं होता*। उनको समाधि और लय की दशा प्राप्त हुई । और वह भजन गाने लगी । जिसकी टेक यह है–राणाजी ज़हर दियो हम जानी ।' एक मारवाड़ी कवि ने उसको यों वर्णन किया:—

राणाजी विष मोक लिया, दीजौ मेड़तनी के हाथ ।
चर्णामृत कर पी गई, तुम जानों रघुनाथ ॥

ऊदा का भक्ति धारण करना

इस विष देने का प्रभाव ऊदा के चित्त पर अधिक पड़ा । वह मीरा से बोली । तुझे भक्ति कैसे प्राप्त हुई ? मीरा ने मुस्कराकर

* लेखक से एक पुरुष ने कहा था कि पंडित बृहशंकर जी महाराज की नाक के सामने एक डाक्टर ने १५ मिनट क्लोरो फार्म का भीगा हुआ रूमाल रक्खा था पर वह बेहोश न हुए ।

उत्तर दिया। यह सब कृष्णमुरारी जी की दया है। वह बोली मुझको भी दरशन कराओ ? मीरा ने उसको भी चेली बना लिया। कबीर साहब की वाणी सत्य है:—

पारस में और संत में यह ही अन्तर जान।
वह लोहा कंचन करे यह करले आप समान॥

राणा के प्रश्नोत्तर

राणा मीरा के पास आया। मैं जान गया तू सच्ची भक्तिनि है पर इस भेष का त्याग करदे। इकलिंग नाथ की पूजा कर जो हमारे राणा के कुल के इष्ट हैं। मीरा ने उत्तर दिया मेरे इष्ट तो गिरधर गोपाल हैं"। वह चुप चला गया।

देश निकाला

कहते हैं कि राणाजी ने इस प्रसंग से भी प्रभावित न होकर मीराजी को स्वयं मारने का संकल्प किया। इसमें संदेह नहीं कि यह बात राजपूती शान व मनुष्यता के नाते एक अति नीचता है। पर विक्रमाजीत जैसे स्वभाव के मनुष्य से उसकी भी आशा की जा सकती है। फिर भी हम इस पर अधिक बल नहीं देते। विष देकर मारदेना राजपूताने में अपने ढङ्ग का एक विचित्र उदाहरण नहीं है। अन्य पुत्रियां भी अपने पिता व बन्धुओं के हाथों मारी जाती थीं इसकी रोक थाम केवल इस अँगरेजी राज्य में हुई। राजपूत बहुधा पुत्री बध के कलंक के दोषी हुए हैं। जो राजपूती वंश की पराकाष्ठा में एक अत्यन्त नीच अभिषाप है। बुरा धब्बा है।

जब किसी प्रकार सफलता न मिली अन्त में राणा ने मीरा को देश निकाले की आज्ञा दी। राजा का आयसु शिरोधार्य ! उसकी आज्ञा के विरुद्ध कोई कुछ नहीं कर सकता। अर्ध रात्रि

के समय मीरा अकेली घर से निकली। रास्ता तै किया। नदी नाले बड़े वेग के साथ उमड़ रहे थे। धम से उसमें कूद पड़ी। क्योंकि जीवन दुखदाई हो रहा था। पर प्रकृति माता को अभी इस अमूल्य रत्न से सेवा लेनी मंजूर थी। वह पानी में गिरी कौन जाने वह कब तक तट पर आई और भंवरों में चक्कर खाती हुई बेसुध रही। लहरें उसको बहा कर किनारे पर ले गईं। और जब आँख खुली उसने अपने आप को दरिया के किनारे रेत पर पाया मालिक को धन्यवाद दिया। और आगे को प्रेम मग्न होकर गाती हुई चली।

वृन्दावन

गायें चराने वाले ग्वाले दूसरी ओर से आ रहे थे। इस देवी को देखकर खुश हो गये। साथ चलना चाहा मीरा बोली। बेटा! वृन्दावन की राह बता दो, मैं गिरधर गोपाल के दर्शनों को जा रही हूँ। रास्ता बता दिया गया। वह बोले हम भी साथ चलेंगे। नहीं मैं देश से निकाल दी गई हुई हूँ। किसी को साथ नहीं लेना चाहती। कोई हर्ज नहीं। माई! हम तुझ को अकेली न जाने देंगे। कौन जाने राह में क्या विपत्ति आ बीते। मीरा मुस्कराई। अच्छा भाई तुम्हारी इच्छा। तीर्थ की यात्राणी गाती हुई सबको मालिक के मुग्ध करने वाले प्रेम के राग गाती हुई खुशी २ जा रही है। साथ बालगोपाल थे जिनकी जाति पहले कृष्ण मुरारी के सखा होने का गर्व करती थी। राह में और भी स्त्री पुरुष मिले। बहुतों ने उसका साथ दिया। और इस प्रकार प्रेमियों का दल बादल लिये हुए राज भक्तिनि वृन्दाबन में दाखिल हुई।

रूप और सनातन जीव गुसांई जी से मिलना

मीरा वृन्दाबन में पहुंची। एक पूरी मंडली साथ थी। खुद तो वह प्रेम में मतवाली थी। लाल नेत्र! दूसरे लोग भी उसके

भक्ति भाव में आये हुये थे ! और एक में अनेक का दृश्य दिखा रहे थे। एक प्रेम प्रवाह था जो अति वेग के साथ उमड़ चला था कृष्ण कनाहीं के भक्तों, साधुओं, प्रेमियों का दर्शन करती और सबको राधा की भक्ति का दृष्य दिखाती हुई रूप और सनातन के मठ पर पहुंची। जिसका नाम जीव और गुसाईं भी मशहूर है। उनसे मिलना चाहा दर्शन की इच्छा प्रगट की उत्तर दिया हम स्त्री से नहीं मिलते। पूछा महाराज ! कब से यह नियम है ! वह बोले सदा से ! मीरा हंसी ओहो ! भूली भाली मीरा ! तेने समझा था कि वृन्दावन में केवल एक पुरुष गिरधर लाल जी ही हैं ! शेष सब स्त्रियां हैं। प्रतीत होता है और लोग भी स्वामी के साथी और जोड़ीदार हैं। बहुत अच्छा ! इस उत्तर को सुनना ही था कि उनके कान खड़े हुए, दौड़े आये। मीरा से मिले क्षमा चाही। और उसका आदर किया मीरा कुछ दिनों वृन्दावन में रही।

गोस्वामी तुलसीदास जी से मिलना और चिट्ठी पत्री

लोग कहते हैं वृन्दावन आने के पहले राणा के अत्याचार से दुखी होकर गोस्वामी तुलसीदास जी से लिखा पढ़ी की थी। यह नितांत मिथ्या है। *क्योंकि इनके समय में बहुत बड़ा अन्तर है और मीरा की वाणी भी उसके इस कल्पित भेजी हुई चिट्ठी पत्रियों से बिल्कुल भिन्न है और आगे की पचास वर्ष की भाषा प्रतीत होती है पर इस संदेष का वर्णन बहुधा हिन्दी पुस्तकों में आया है यदि ठीक है तो यह वार्तालाप अति लाभ प्रद है और यदि ग़लत है तो भी भक्ति भाव के संचार में बड़ी हृदय बेधक प्रतीत होगी, हम उसको इसी दृष्टि से यहां उल्लेख करते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी सम्वत १६८० में मरे और मीरा का देहान्त सम्वत १६०३ में हुआ।

मीरा का पद:—श्री तुलसी सुख निधान दुख हरन गुसाईं।
बार ही बार प्रणाम करूँ अब हरो शोक समुदाई॥

घर के सुजन हमारे जेते सबन उपाधि बढ़ाई।
साधुसंग और भजन करत मोहि देत कलेश दबाई॥
बाल पने ते मीरा कीन्हा गिरधर संग मिताई।
सो तो अब छूटत नहीं मोसे लगी लगन बरियाई।
मेरे मात पिता के सम हो हरि भक्तन सुखदाई।
हमको क्या उचित करिवो कोसो लिखो समझाई॥

गोस्वामी तुलसीदास जी का पद

जाके प्रिय न राम वैदेही।
तजिय ताहि कोटि बैरी सम तदपि परम सनेही॥
तज्यो पिता प्रहलाद विभीषण बन्धु भरत महतारी।
बलि गुरु तज्यो कंत बृजभामिन भये सब मंगलकारी॥
नातो नेह राम सों मनिअत सुहृद सुसेव्य जहां लों।
अँजन कहा आँख जो फूटे बहुतक कहूं कहाँ लों॥
तुलसी सो सब भाँति परम हित पूज्य प्राण ते प्यारो।
जो सों होय सनेह रामपद ए तो मतो हमारो॥

सोया छंद

सो जननी सो पिता सोई भ्राता सो भामिन सुत सो हितु मेरो।
सोई सगो सो सखा सोई सेवक सो गुरु सो सुर साहब चेरो॥
सो तुलसी प्रिय प्राण समान कहां लों बताइ कहूं बहुतेरो।
जो तजि गेह का देह को नेक सनेह सो राम का होय बसेरो॥

हम इस चिट्ठी पत्री को ग़लत कहते हैं। पर जनसाधारण का ख्याल यह है कि तुलसी दास का पत्र पाकर मीरा ने गेरुआ वस्त्र धारण किये। चम्पा चमेली को लेकर मेड़ता अपने पीहर में आई और कुछ दिन बाद वृन्दावन चली गई। जो कुछ हो! पर यह

स्वामी जी का कल्पित उत्तर बड़ा शिक्षा प्रद और मनोरंजक है। इस कारण यहाँ लिख दिया है।

द्वारिका की यात्रा और वास

गुसाईं से मिलकर मीरा द्वारिका चली गई। वहां रंछोड़ जी के दर्शन और भक्तों के सतसंग में खुशी से रहने लगी। यहाँ ही आकर उसने बहुत से भजन कहे, पुस्तकें लिखीं, भक्ति का प्रचार किया। चार पुस्तकें उसकी विख्यात हैं। १. नरसी जी का मायरा, २. गीत गोविन्द की टीका, ३. राग गोविन्द, ४. मीरा के पद। हमने केवल चौथी और आखिरी किताब देखी है।

विक्रमाजीत * और उसके ब्राह्मणों का द्वारिका आना और मीरा की मृत्यु

द्वारिका आने पर मीरा की भक्ति जग में विख्यात हो गई। द्वारिका तो द्वारिका ही थी। उदयपुर [मेवाड़] में उसके भजन सबकी जिभ्या पर रहते थे। घर २ उसके गीत गाये जाते थे। मेवाड़ में हर व्यक्ति राणा को बुरा भला कहने लगा। मीरा के जाते ही उस पर अनेक प्रकार की आपत्ति विपत्तियाँ आने लगीं। गुजरात के बादशाह बहादुरशाह अव्वल ने मेवाड़ पर चढ़ाई कर दी। कोई किसी की वाणी को कैसे रोक सकता था। सब कहने लगे, यह आफ़त मेवाड़ पर केवल मीरा के सताये जाने से आई है। राणा घबराया। कहते हैं वह ब्राह्मणों को लेकर द्वारिका आया। मीरा रंछोड़ जी के मन्दिर की सीढ़ी पर बैठी हुई प्रेम मग्न थी। अपने बनाये हुये भजन इकतारे पर गारही थी। बेसुधी की दशा थी। दरो दीवार सब प्रभाव में आये हुए थे। विक्रमाजीत देर तक भजन सुनता रहा। उसने अपना वेष बदल

विक्रमाजीत का द्वारिका आना इतिहास से साबित नहीं होता। सम्भव है उसके भेजे हुए केवल ब्राह्मण गए हों।

रक्खा था। साधू के वेष में वहाँ आया था। जब मीरा ने अपना भजन बंद किया वह पास पहुँचा। नमस्कार किया। मीरा ने कहा महात्मन मैं खुद साधुनी हूँ। आपको क्या दे सकती हूँ। उसने कहा मैं क्षमा मांगता हूँ। मीरा ने राणा को पहिंचान लिया उसकी आँखें डब डबाई हुई थीं।

चित्तौड़ चलने की प्रार्थना की। उसने नम्रता के साथ उदासीनता प्रकट की। साथी ब्राह्मण बोले! महारानी अगर तुम न चलोगी तो हम तुम्हारे ऊपर प्राण दे देंगे। मीरा बोली मैं रंछोड़ जी के मन्दिर में हो आऊँ। यह कह कर वह मन्दिर में गई। और स्तुति का आखिरी भजन गाने लगी। "हरि तुम हरो जनन की पीर" जब भजन पूरा हो गया। आवाज़ बन्द हो गई। राणा साथियों सहित कुछ देर तक इन्तज़ार करता रहा। जब वह न आई। सब मन्दिर में गये। मीरा का कहीं पता नहीं था। देखते क्या हैं कि मूर्ति के मुख से मीरा के चीर का कुछ टुकड़ा बाहर निकला हुआ था। समझ गये मीरा अंतर ध्यान होकर रंछोड़ जी में समा गई। फिर भी इधर उधर खोज की। पता चलने वाला नहीं था न चला। विवश होकर लौट आये और चित्तौड़ को चले गये। यह कहावत है। भक्तों के बिश्वास की बात है इस से अधिक कहना व्यर्थ है। इसके बाद विक्रमाजीत के पीछे रनवीर मेवाड़ की गद्दी पर बैठा। वह अत्याचारी साबित हुआ। तब मीरा का चौथा देवर उदयसिंह राजा हुआ। जिसके नाम से उदय पुर बस रहा है। इसी के समय में चित्तौड़ अकबर बादशाह के हाथ आया। और मेवाड़ पर घोर संकट छागया। जो इतिहास पढ़ने वालों से छिपा नहीं है।

मीराबाई का वरदान

मेड़ता में बास के समय जयमल जी ने मीरा की बहुत सेवा की। मीरा ने उसको यह वरदान दिया था:—"बहुत बढ़ै तेरा परिवार। नहीं होय कजिया में हार ॥" यानी तेरी सन्तान बहुत

बहुत बढ़ेगी और लड़ाई भिड़ाई में सफलता रहेगी। और मालिक की मौज ! ऐसा ही हुआ। जयमल की सन्तान मेड़तये राठौर बहुत कसरत से हैं। और अपनी सूर वीरता और साहस के लिये अति विख्यात हैं। यह मारवाड़ी कहावत जोधपुर में आमतौर पर प्रसिद्ध है। "जां राव दने मरन ने दूदा।" अर्थः—कि उदा की सन्तान [रावत राठौर] बरात और दूदा की सन्तान [मेड़तये राठौर] मरने के लिए भले हैं।

इस संक्षिप्त हाल के बाद अब हम मीरा के इतिहास को नाटक के रूप में दिखाते हैं जो भक्त जनों की खुशी और मनोरंजन की वस्तु होगी। इसमें मीरा के भजन भी उसकी वाणी में आये हैं। मीरा संस्कृत और ब्रजभाषा भी जानती थी।

राज भक्तिनि नाटक

श्री कृष्णचन्द आनन्द कन्द की स्तुति (छन्द)

मन मोहन चितचोर रंगीले, छबि अनुपम मंगल दायक।
अदभुत लीला चतुर छबीला, जन मन रंजन सुर नायक॥
साँवली मूरति सुन्दर सूरति, देखन को जियरा तरसे।
चरण कमल का मिले जो दर्शन, आनद घन मंगल बरषे॥
प्रेम रूप जग भूप सुहाई, दाता दानी विज्ञानी।
माया रहित सहित निज शक्ति, गुणातीत गुण की खानी॥
जब जब होय धर्म की हानि, धर औतार करें लीला।
राधा [1]रुकमिणि सङ्ग लिये, जग भार उतारें मृदु शीला॥
कंस[2] रूप अज्ञान निसाचर, ताहि मार प्रतिपाल करें।
ज्ञान धर्म का पंथ चलावें, सृष्टि भार निज शीष धरें॥

१—सुरत, निरत जो सतोगुणी और प्रेममई है। २—मन की दुष्ट वृति अज्ञान।

विषय भोग के फन्द छुड़ावें, गोपी[३] गोप के हितकारी।
काल कर्म का फाँस कटावें, निर्मल गति विमला कारी॥
गिरधर[४] नागर जगत उजागर, सुख सागर घट घट बासी।
दुख भँजन मद मोह निकन्दन, काम दमन मंगल रासी॥

पहला तमाशा

(चित्तौड़ का शाही महल, मीरा और भोजराज मृत्यु शय्या पर)

पहला सीन

भोजराज—मीरा ! सुन्दरी ! तू किधर है ?

मीरा—प्राणनाथ ! मैं तो आपके सिरहाने बैठी हूँ। क्या आप मुझको नहीं देखते ?

भोजराज—प्रिया ! मेरी आँखें पथरा रही हैं। नब्ज़ छूटने ही को है। अफ़सोस ! तू इतनी बाल अवस्था में ब्याही गई, कि तुझको कुछ संसारी सुख प्राप्त न हुआ। और तू यह भी नहीं जानती कि स्त्री पुरुष का सम्बन्ध क्या है ? दाता ! तेरी इच्छा ! यह बालपन और पति का वियोग ! यह बालपन ! यह रूप लावण्य ! और यह सितम !! सितम है ! सितम है !! सितम है !!! सितम ! क्या ज़रूरत थी कि मुझको ऐसी बाल आयु की सुन्दरी के साथ विवाह किया गया। अफ़सोस ! अफ़सोस !!

मीरा—महाराज ! यह आप कहते क्या हैं ? मेरी समझ में आपकी बात नहीं आ रही।

भोजराज—ग़ज़ब का भोलापन ! मीरा तू क्या जाने और कैसे जाने ! ख़बर नहीं हमारे शास्त्रकारों को क्या हुआ था। जिन्होंने किशोर अवस्था की छोटी छोटी लड़कियों के विवाह करने

३—सद्भाव जो गुप्त हैं उनके उभारने वाले। ४—पहाड़ जो धर्म की रक्षा का भार है उसके उठाने वाले।

का नियम बनाया। और हिन्दू क्यों अब तक इस लकीर को पीटे जा रहे हैं।

मीरा—आप कह क्या रहे हैं?

भोजराज—मीरा मैं अब इस असार संसार को छोड़ रहा हूँ। पल क्षण में विदा हुआ चाहता हूँ। अब दुनियां को छोड़ने का समय निकट है।

मीरा—कहां को जाइयेगा? मैं भी न आपके साथ चलूं? दादाजी ने कहा था कि अब तेरे साथी कुँवर जी हैं।

भोजराज—खेद है! यह कम समझी और हिन्दुओं में ऐसे बाल विवाह।

मीरा—महाराज मेरा विवाह तो उसी समय हो गया था जब मैं पांच वर्ष की थी।

भोजराज—हैं! यह तू क्या कहती है? किसके संग तेरा विवाह हुआ था?

मीरा—गिरधर गोपाल के संग।

भोजराज—यह गिरधर गोपाल कौन से?

मीरा—गिरधारी, कृष्णमुरारी, मधु सूदन, जन-हितकारी।
जसुदा नन्दन, कंस निकन्दन मुर्लीधर शोभाधारी॥

भोजराज—सत्य है सब के स्वामी वे ही हैं। क्या तुझको उन पर सच्चा विश्वास है?

मीरा—विश्वास को तो मैं नहीं जानती। हां गिरधर गोपाल को जानती हूँ।

भोजराज—फिर मैं तेरा कौन हूं?

मीरा—आप?

भोजराज—हां! हां! मैं?

मीरा—आप राणा के पुत्र! मेरे प्राण नाथ! और मेरे जीवन के साथी!

भोजराज—बस ! मीरा बस ! अब अधिक कुछ कहने की बात नहीं ! मैं जाता हूँ। गिरधर गोपाल तेरी संभाल करेंगे।

मीरा—हां यह सत्य है। फिर मैं भी आप के साथ चलूँ ?

भोजराज—कहाँ ?

मीरा—जहां आप जा रहे हैं।

भोजराज—नहीं तू यहां रह। मेरा साथ तू न दे ?

मीरा—तो फिर मैं किसका साथ दूं।

भोजराज—गिरधर गोपाल का।

मीरा—गिरधर गोपाल तो स्वयं मेरे अङ्ग सङ्ग है। मैं उसका साथ कैसे दूं ? वह तो मेरा सङ्ग एक पल भी नहीं छोड़ते।

भोजराज—धन्य है ! मीरा धन्य ! अब तक मुझे तेरी चिंता थी। अब मैं निश्चिंत हूं। गिरधर गोपाल तेरी रक्षा करते रहेंगे। और जीवन में तुझको सहायता मिलती रहेगी।

मीरा—हां सत्य बचन ! फिर मैं आप के साथ न चलूं !

भोजराज—नहीं तू यहां रह ! गिरधर गोपाल का भजन करती रह। जिस सफर में मैं जा रहा हूँ उसका कोई संगी साथी नहीं। उसमें क्या होता है कोई नहीं जानता ! फिरा न कोई वहां से जो पूछूँ। मुसाफिरो ! कहो वहां क्या गुज़रती है ?

मीरा—गिरधर गोपाल वहां भी साथ देते हैं। वह एक क्षण को भी साथ नहीं छोड़ते। आप पर भी दया करेंगे।

भोजराज-अच्छा मीरा ! गिरधर गोपाल तेरी और हमारी सब की रक्षा करें ! ले मैं जाता हूँ ! राम राम !

[भोजराज प्राण त्याग देता है और लोग ले जाकर उसकी क्रिया कर्म कर देते हैं।]

दूसरा सीन

[सास, मीरा और मीरा की दुर्दशा]

सास–मीरा तू अभागिनि है। जन्मजलि, देख ! अभी शादी हुये देर नहीं हुई कि तेरे पति का वियोग हो गया।

मीरा–माताजी ! मैंने क्या किया ? मेरा क्या अपराध है ?

सास–तू अभागिनि है। सब्ज़ क़दम है। जब से आई अपने साथ दुख मुसीबत लाई।

मीरा–खेद है माता जी !

सास–खेद तो मेरे लिए है, जो इस आयु में मेरा लड़का गुज़र गया।

मीरा–गिरधर गोपाल की इच्छा ! कोई क्या करे ! उस पर किसी का क्या बस है ?

सास–अब तू क्या करेगी ?

मीरा–जो मैं पहले किया करती थी।

सास–पहले क्या किया करती थी ?

मीरा–गिरधर गोपाल का भजन, उनकी आराधना, उनकी उपासना।

सास–अभागिनि ! तब ही तो तेरी यह दशा हुई। व्याही स्त्री को भक्ति शोभा नहीं देती। तेरी माता कैसी निरबुद्धि थी जिसने तुझ को यह बातें सिखाईं।

मीरा–माता जी ! माता तो बालपन में ही परलोक सिधार गई थी। मुझे याद भी नहीं कि मैंने उसको देखा भी था।

सास–पैदा होते ही तूने माता की भेट ली। विवाह होने पर पति की जान ली। अब यह देखना है कि आगे इस कुल की क्या दशा होती है ?

मीर–माता जी ! क्या इन सब बातों में मेरा ही दोष है ? मैं तो अबला, दीन, हीन बालक हूँ। आपने जो इतनी बातें कही हैं पूरे तौर पर तो मुझे इनकी भी समझ नहीं है मैं हैरान हूँ ! क्या कहूँ ? और क्या न कहूं ?

सास–हाँ तेरा ही कसूर है। न तू आती न मेरा पूत मरता।

मीरा– माता ! मैं निर्दोष हूँ। मैंने कुछ भी नहीं किया। आपके बचन वाण के समान हृदय को छेदते हैं। मुझ पर कृपा कीजिये। दुखियारी के चित को और न दुखाइये।

सास–क्या मैं तुझ से कम दुखी हूं ?

मीरा–इसका अनुमान कौन करे ?

सास–हाय ! मेरा पुत्र मर गया। बुरे घर में व्याहा गया था। न उसका विवाह होता, न मुझ पर यह आफत आती।

मीरा–संतोष धारण करने के सिवाय और क्या बस है।

सास–संतोष ! मीरा बस चलता तो कभी मुख तक न देखती।

मीरा–तो मुझको और कहीं भेज दीजिये।

सास–डाइन तू चुप भी नहीं होती, टर टर कर रही है। हाय ! जले जी का फफोला किस पर फोड़ूं ?

मीरा–जितना जी चाहे सताले सितम ईजाद मुझे।
मिसले तस्वीर हूं आती नहीं फर्याद मुझे ॥

सास–तू तो मुझे भी दोषी बनाने लगी।

मीरा–मैं बोलती हूँ तो आप नाराज़ होती हैं। और चुप रहती हूँ तो और कुछ समझा जाता है। कहिये,मैं करूँ भी तो क्या करूँ? जाऊँ भी तो कहाँ जाऊँ ? मैं सचमुच अभागिनी हूँ। माता जी ! मैं हाथ जोड़ती हूं। क्षमा कीजिये। यह समय दिल दुखाने का नहीं है। आप महारानी हैं मुझ को अपनी दासी समझिये। मीरा जीते जी आपकी दासी बनी रहेगी।

सास–चल दूर हो तूने अपनी मा की बड़ी सेवा की है, पति की भी खूब सेवा की, अब मेरी सेवा करने की सूझी है।

मीरा–मरते रहे हम ली न ख़बर आके किसी ने।
मारा दुखी दीन को तड़पा के किसी ने॥
शीशये दिले नाज़ुक के जो सौ टुकड़े हुए हैं।
फैंका इस पे संग को झुंझला के किसी ने॥

सास–मैंने पहले ही सुन रक्खा है कि तू कविता करती है। यह और भी अवगुण और दुर्भाग्य है। कवि सदा से अभागे विख्यात हैं। यह ही तो कारण है जिसके फलस्वरूप यह विपत्ति आई।

मीरा–माता जी! क्षमा कीजिये? जो आज्ञा हो पालन करूँ।

सास–ला तेरी माँग का सिंदूर उतार दूं। और राख डाल दूं, वस्त्र आभूषण उतार दे। और आज से इसी आयु में रंडापा भोगने को तैयार होजा। मरने वाला तो मर गया। तू और भी मेरे कलेजे को छेदती रहेगी।

मीरा–बहुत अच्छा मैं हाज़िर हूँ। जो चाहिए मेरे साथ सलूक कीजिये। मुझ को क्या उज्र हो सकता है।

[रानी एक २ करके सब आभूषण उतारती है। और मीरा को मैले कुचेले वस्त्र पहना देती है]

दूसरा तामशा

पहला सीन

मीरा अकेले में ग़ज़ल गाती है।

हजारों दुखड़े सहा करूंगी, शिकायत किसी की नहीं करूँगी।
भुलाऊँगी सबको दिल से अपने हमेशा यादे खुदा करुँगी॥
यह रंजो ग़म यह दर्द आफ़त, सुख दुख सब के सब रहेंगे।
नहीं ग़रज़ मुझको इनसे कोई नाम मालिक सदा जपूंगी॥

नज़र में उसकी खुबी है सूरत ध्यान उसका समाया मन में।
ख्याल को उससे एक दम भी कभी न हरगिज़ जुदा करूंगा।
नहीं मैं कुछ तुमसे मांगती हूँ नहीं मैं कुछ तुम से चाहती हूं।
दिलो जिगर रुहो जिस्म हाज़िर लेलो सबको न उज्र करुँगी॥
समझ लिया मैंने इश्क़ की है, बहुत कड़ी मंज़िले मुसीबत।
बुराई करें कोई लाख मेरी मैं उसके बदले भला करुंगी॥

(अपने मन में) हाय! मेरी सास ने कल मुझ दीन दुखी अबला से क्या २ बुरी २ बातें नहीं कही थीं मैं अभी इतनी बालक हूँ। अपनी कुछ सुध बुध तक नहीं है। मैं जानती थी राणा के महल में सभ्यता व शिष्टाचार होगा। पर घर २ देखा, एक ही लेखा। राजा प्रजा सब एक समान है। अच्छा! जो होना था होगया। मालिक की मौज! गिरधर गोपाल! तुम पतित पावन मशहूर हो। क्या तुम अपनी मीरा को कभी भुला सकते हो? नहीं यह कभी न होगा (गाती है)

भजनः-सुन लीजै बिनती मोरी। मैं शरण गहि प्रभु तेरी।
तुम तो पतित अनेक उधारे भव सागर से तारे।
मैं सबका तो नाम न जानूं, कोई कोई भक्त बखाने।
अम्बरीष, नाना व सुदामा, पहुँचायो निज धामा॥
ध्रुव जो पांचवर्ष को बालक दरश दियो घनश्यामा।
धन्ना भक्त का खेत रखाया। कपिला बैल चराये॥
शिवरी के झूंठे फल खाये, काज करे मन भाये।
सदना ओ सैना नाई को, तुम लीन्हा अपनाई॥
कुर्मी की खिचड़ी तुम खाई। गंगा पार लगाई।
मीरा प्रभु तुम्हरे रंग राती, जानत सब दुनियाईं।

नोट—इस नाटक में सब भजन मीरा बाई के हैं। ऊपर के भजन में भक्तों का ज़िक्र किया गया है। जो भक्त माल में हैं।

(आप ही आप) मैं अब करूँ भी तो क्या करूं। भाग्य ने यह दिन दिखाये। अपना कोई नहीं। पराये सब ही दीखते हैं। दिल की व्यथा भी कहूं तो किससे कहूँ ! सुनने वाला और सहानुभूति दिखाने वाला एक नहीं। अब तो गिरधर गोपाल ! मेरी लाज आपके हाथ है।

मैं पगली तेरे दर की, कहीं आना न जाना है।
तेरे ही द्वारे अब प्यारे हम ग़रीबों का ठिकाना है॥
हटो दुनियाँ के मतवालो नहीं तुम से ग़रज़ कोई।
हैरत है ! कि मेरे साथ क्यों सारा ज़माना है॥
जो आये प्रेम के मधुशाला में प्यार की सुरा पीने।
तो समझा खूब हमने अब न पानी है न दाना है॥
हवा के झोंको ! सुनो तुम कोई नहीं मेरा।
यह लाश मेरी बाद मरने के तुम्हें कंधों उठाना है॥
यह दुनियाँ चंद रोज़ा है करें क्यों फ़िक्र हम इसकी।
कि दम के दम में यारके कूंचे,इक दिन हमको जानाहैं।

(चित में व्याकुल होकर) अब मेरा जीवन और तरह का शुरू होता है गोविन्द मुरारी तेरी शरण ! भजनः—

टेक—मेरी सुधि ज्यों जानो त्यों लीजै जी।
पल पल भीतर पंथ निहारूं दर्शन मुझ को दीजै जी। मेरी....
मैं तो हूं बहु औगुण हारी औगुण चित्त न दीजैजी। मेरी....
मैं दासी हूं तुम्हारे चरण की मिलबिछड़न मतकीजैजी। मेरी....
मीरा तो शरणागत गुरु की हरि चरणन चित दीजै जी। मेरी....

भजन

टेक—मैं तो शरण तुम्हारी जी, मोहि राखो कृपा निधान।
अजामेल अपराधी तारे, तारे नीच सदान।
जल बूड़त गजराज उबारे, गंगा चढ़ी विमान। मोहि....

और अधम तारे बहुतेरे भाखत संत सुजान।
कुबिजा नीच भीलनी तारी जाने सकल जहान। मोहि····
कहाँ लग कहों गिनत नहीं आवे थक रहे वेद पुरान।
मीरा कह मैं शरण तिहारी सुनियों दोनों कान। मोहि····

दूसरा सीन

मीरा व सहेलियां

मीरा—कुंवर जी जब से मरे हैं दुनियां मेरी निगाहों में अँधेरी हो गई! ग़ज़ाब है! इस अवस्था में यह दुख! उचित तो था कि सब लोग मेरे साथ हमदर्दी करते! पर यहाँ तो ईर्षा और द्वेष का बर्तावा है।

केतकी—इसका कारण आपको मालूम नहीं है।

मीरा—भला तुम ही कुछ बताओ?

केतकी—सुनो शादी सम्बन्ध का अर्थ ही यह है कि बराबर वालों में किये जाँय वह अच्छे रहते हैं। आपके बाप दादे केवल दो चार गांव के रईस हैं। और राणा का कुल सब में श्रेष्ठ, विशाल राज्य वाला और अति धनी है।

मीरा—पर मेरे पिता का कुल मान प्रतिष्ठा में किसी प्रकार राणा के घराने से कम नहीं है। तमाम राजस्थान ऊदाजी के नाम का मान व आदर करता है।

केतकी—यह सब सही। पर हैसियत में तो फ़र्क़ है। इस पर भी अगर कुंवर भोजराज जी जीवित रहते तो किसी को तुम्हारी मान हानि का साहस न होता। या तुम्हारे बाप दादा अधिक मान प्रतिष्ठा वाले होते तब भी सब भय करते और अपशब्द बोलने का साहस न करते। और मैं किसकी कहूँ। सबसे अधिक तुम्हारी सास तुम्हारे पीछे पड़ी रहती है।

मीरा—फिर मैं क्या करूँ ?

केतकी—सब्र संतोष और मालिक का धन्यवाद।

मीरा—कब तक ?

केतकी—जब तक दम में दम है तब तक। अब आप न तो कहीं जा सकती हैं न किसी को बुरा भला कहने से रोक सकती हैं। हम सब सहेलियां जो मेड़ते से आई हैं। यह दशा देख देख मन ही मन कुढ़ती हैं। पर क्या करें किसी पर बस नहीं चलता। यदि किसी को कुछ समझाती बुझाती भी हैं तो मामला और टेढ़ा ही पड़ता है। कौन जाने उस समय हम यहाँ रहने भी पायें या नहीं। और बोरिया बिसतरा बाँधने के लाले पड़ जाँय। तब तुम अकेली रह जाओगी।

मीरा—पर यह दशा आख़िर कब तक रह सकती है ? हर चीज़ की सीमा होती है। यह छेड़ छाड़ मुझको कभी न कभी जबाव देने को विवश करेगी। और इसका परिणाम मेरे लिये ख़राब होगा। इधर मेरी सास मेरे नाम पर उधार खाये बैठी रहती है। उधर मेरी नन्द ऊदा बाई अलग डाट डपट करती है।

केतकी—सास नन्द जन्म की बैरिन होती हैं। यह कोई नई बात नहीं है। और अब तो इनकी बात बन पड़ी है।

मीरा—देखो इनको इतना भी विचार नहीं है कि एक बाल वधु अपने माता पिता का घर छोड़ कर उनके यहाँ आई है। उसको दिलासा देनी चाहिये। न कि उल्टा हाथ धोकर उसके पीछे पड़ जाना चाहिये !

केतकी—वफ़ा की आस न रखना ज़माने से। ज़फ़ा करेंगे यह वफ़ा के बहाने से।

मीरा—ठीक ! यह ही बात है। ख़ैर ! मैंने तो कुछ और ही सोच रक्खा है।

केतकी—मैं भी तो सुनूं वह क्या है ?

मीरा—अब यह बिचार है कि कहीं गुरु का दर्शन हो जाय तो उनके सत संग का लाभ उठाऊं ! और सदां के लिये दुनियां से मुँह मोड़ लूं ।

केतकी—सुनो मीरा । संभल कर रहना । तुम चेली भी हो तो रैदास भक्त की । जो जाति के चमार हैं । राना का कुल अभिमानी है । ऐसा न हो कि उनके पास आने जाने से और भी अधिक नई नई आपत्ति विपत्ति सिर पर आयें ।

मीरा—नहीं परवा सितम जो ढाये कोई । हम हैं द्रढ़ आज़माये कोई ।
केतकी-नंद और सास का करो कुछ खौफ़ सिर ताज़ी बला न आये कोई।
मीरा-हथेली पै सिर रखकर मैदान में आये।जिस तरह चाहे सताये कोई।

केतकी—रैदास जी महाराज आज कल चित्तौड़ में ही आये हुए हैं । सतसङ्ग का मौका तो है । पर मैं दिल में डरी हुई हूं ।

मीरा—ओखली में सिर दिया तो मूसलों का क्या डर । छत्ते को छेड़ा तो बरों के डंक का क्या खौफ़ो ख़तर । तू बता महाराज जी कहाँ पधार रहे हैं ? मैं चलकर उनका दर्शन करूं और अपना जन्म सुफल करूँ ।

केतकी—महल के उत्तर की ओर आध मील के लगभग उनका निवास स्थान है ।

मीरा—चल फिर उनकी सेवा में चलें । यह मन में बड़ी अभिलाषा है ।

केतकी—बहुत अच्छा ! कल प्रातः ही वहाँ चलें ।

मीरा—(खुशी से) भजन गाती है ।

प्यारे दर्शन दीजो आय, तुम बिन रह्यो न जाय ।
जल बिन कमल चंदा बिन रजनी,ऐसे तुम बिन दीखू सजनी ।
व्याकुल व्याकुल करों रैंन दिन विरह कलेजे खाय । प्यारे····

दिवस न भूख नींद नहीं रैना, मुख से मेरे न निकले बैना।
कहा कहूँ कछु कहत बनेना, मिलकर तपन बुझाय। प्यारे....
क्या तरसाओ अन्तरयामी, आय मिलो कृपा कर स्वामी।
मीरा दासी जन्म जन्म की पड़ी तुम्हारे पाय। प्यारे दर्शन....

तीसरा सीन

(सतसंग, रैदास, मीरा, वग़ैरा)

मीरा–(रैदास जी को प्रणाम करती है) भजन गाती है।

साजन घर आव मीठा बोला।
कब की खड़ी खड़ी पंथ निहारूं, थाहें[1] आया होसी भला।
आदि निसंक[2] संक[3] मत मानो आया[4] हैं सुख रहला[5]॥
तन मन वारूँ करूँ न्यो छाऊँ दीजो श्याम मुहेला[6]।
आतुर बहुत बिलंब नहीं करना आया हैं रंग रुहेला॥
तेरे कारन सब रंग त्यागा काजल तिलक तमोला[7]।
तुम देखे बिन कल न परत है कर धर रही कपोला॥
मीरा दासी जन्म जन्म को दिल की घुंडी खोला।

रैदास—कौन है ? मीरा ! तेरा क्या हाल है। तुझ को क्यों इतना रंज व मलाल है। मैंने तेरा हाल सुन रक्खा है। तू कुछ चिन्ता न कर। गिरधर गोपाल का मन में ध्यान धर। सब भला होगा। भजन—अब कैसे छूटे नाम रट लागी।

१–प्रभुजी ! तुम चन्दन हम पानी। जाके अंग अंग बास समानी।
२–प्रभुजी ! तुम घन बन हम मोरा। जैसे चितवत चन्द्र चकोरा।
३–प्रभुजी ! तुम दीपक हम बाती। जाकी ज्योति जरे दिन राती।
४–प्रभुजी ! तुम मोती हम धागा। जैसे सोनहि मिलत सुहागा।

१–यहाँ २–निडर ३–डर ४–आने से ५–मिलता है। ६–मोहने वाला ७–पान।

५–प्रभुजी ! तुम स्वामी हम दासा। ऐसी भक्ति करे रैदासा। तू ! इस तरह उसका ध्यान कर। दिल दूर सब मान अपमान कर, मीरा—धन्य हो नाथ ! भजनः—

मीरा मन मानी। सुरत सील असमानी।
१–जब जब सुरत लगे वा घर को। तब तब नैनन पानी॥
२–ज्यों हिये पीर तीर सम सालत। कसक कसक कसकानी।
३–रात दिवस मोहि नींद न आवे, भावे अन्न न पानी।
४–ऐसी पीर विरह तन भीतर, जागत रैन बिहानी।
५–ऐसा वेद मिले कोई भेदी, देश विदेश पिछानी॥
६–तासों पीर कहूं तन केरी, फिर नहीं भ्रमू रवानी।
७–खोजत फिरूँ भेद वा घरको, कोई न करत बखानी॥
८–रैदास संत मिले मोहि सतगुर,दीन्हा सुर्तशब्दमोहि दानी।
९–मैं मिली जाय पाय पिया अपना,तब मोरी पीर बुझानी।
१०–मीरा खाक खलक सिर डारी। मैं अपना घर जानी।

रैदास–धन्य है ! मीरा धन्य ! तू गिरधर गोपाल की प्यारी है। तेरा सहायक कृष्ण मुरारी है। भक्ति भाव की सांची कमाई कर। मन से दूर संसार अगमा पाई कर।

१–सांची प्रीत हम तुम संग जोड़ी, तुम संग जोड़ और संग तोड़ी।
२–जो तुम बादर तो हम मोरा। तुम जो चन्द्र हम भये चकोरा।
३–जो तुम दीवा तो हम बाती। जो तुम तीरथ तो हम जात्रि।
४–तुम्हरे भजन कटा जम फांसा। भक्ति हेतु गावे रैदासा।

❀ मीरा—भजन ❀

जोगी मतजा, मतजा, मतजा, पाय परूँ मैं तेरी चेरी हूँ।
१—प्रेम भक्ति का पैंड़ा न्यारा। हमको वाकी गैल बता जा।
२—अगर चन्दन की चिता रचाऊँ। अपने हाथ जला जा॥
३—जरि बलि भई भस्म की ढेरी। अपने अँग लगाजा।
४—मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर। ज्योति में ज्योति मिलजा॥

रैदास—रानी ऐसा ही होगा। इसी जीवन में तुझ को राधा की भक्ति प्राप्त होगी। भजन:—

जो तुम तोरो राम में नहीं तोरूं, तुम संग तार कौन विधि जोरूं।
तुम्हरे चरण कमल का भरोसा, तीरथ व्रत करूं मैं ऐसा।
जहां जहां जाउं तुम्हारी पूजा, तुम सा देव और नहिं दूजा।
मैं अपनों मन हरि सों जोड़ू, हरि सों जोरि सब न सों तोरूं।
सबही पहर तुम्हारी आसा, मन कर्म बचन कहै रैदासा।

मीरा–दो० प्रभु काटो जम फंद तुम सम नहिं जगत की आस।
मीरा तो हर दम भजै राम नाम प्रति सांस॥

रैदास–दो० रैदास कहे जाके हृदय रहे रैन दिन राम।
सो भक्ता भगवंत सम क्रोध न व्यापै काम॥

मीरा–दो० घर में तो झगड़ा मचा निसदिन बाद विवाद।
मीरा की प्रभु कीजिये दया महर से याद॥

रैदास–दो० रैदास रात न सोइये दिवस न कीजै स्वाद।
अहिनिस हरि को सुमिरिये छांड़ सकल प्रतिपाद।

मीरा–दो० पीर पिरानी विरह की मोसे सही न जाय।
तपन बुझाओ हिय की कोई साजन आय॥

रैदास–दो० हरि सा हीरा छांड़ कर करै आन की आस।
ते नर नरके जांयगे सत भाषे रैदास॥

मीरा–दो० बाहर भीतर हौं लगी सतगुरु गये लगाय।
तन मन जर माटी भया माटी मांह मिलाय॥

रैदास–दो० अंतर गति राची नहीं नही बाहर कथे अदास।
सो नर नरके जांयगे सत भाषे रैदास॥

मीरा–दो० मीरा दासी चरण की लीजै चरण लगाय।
जोग जुगति नित नैम सब दीजै मोहि समझाय॥

रैदास–दो० सतगुरु सत त्रेता ही मुख द्वापर पूजा चार।
तीनों जुग तीनों द्रढ़े कलि में नाम अधार॥

(मीरा प्रणाम करके आनन्द मग्न महल को जाती है)

तीसरा तमाशा

पहला सीन

(राणा विक्रमाजीत, दयाराम पंडा, बीजा बर्गी बनियां, गूजर गुरु आदि)

दयाराम–ग़ज़ब है ग़ज़ब है ग़ज़ब होगया।
जो होना था अफ़सोस सब हो गया॥
राणा–बता क्या हुआ मैं सुन तेरी बात।
हुई राज में मेरे क्या वारदात॥
दयाराम–है चित्तौड़ में एक आया चमार।
जो बे आबरू है ज़लील और ख्वार॥
है मशहूर रैदास जी उसका नाम।
उसे भक्त कहते हैं सब ख़ासो आम॥
ज़माने में उसकी मची धूम धाम।
जिसे देखिये वह है उसका ग़ुलाम॥
लिया उसने मीरा को चेली बना।
यह धब्बा बुरा राज घर को लगा॥
राणा–नहीं झूंठ कहता है तू नाबकार।
नहीं ऐसी बातों का कुछ ऐतवार॥
दयाराम–यह बनियां यह गूजर है मेरे गवाह।
ज़रा पूछ भी देखिये इनसे आह॥
राणा–कहो कहते क्या तुम हो देखा है क्या?
बयां तुम करो मुझ से सब माजरा।
गूजर–महाराज मीरा गई थी वहां।
यह रैदास आकर बसा है जहां॥

नहीं इसमें शक है यह है सच्ची बात।
कि केतकी बांदी भी थी उसके साथ॥
बहुत देर दोनों में हुई बातचीत।
शरीफों में ऐसी नहीं होती रीति॥
कहां रानी और फिर कहां यह चमार।
जाके किया उसने नाहक में ख्वार॥

बीजा बरगी बनियां:—यह सच है कि रानी गई थी वहां।
यह रेदास आकर बसा है जहां॥
यह बात किसी को नहीं है पसंद।
कि सुनते ही होता है दिल सबका कुन्द॥

राणा—अफ़सोस! भइया को मरने की देर नहीं हुई! और मीरा ने यह स्वांग रच डाला।

गौड़—आपकी माता रानी जी कहती हैं कि मीरा बड़ी नट खट है। वह किसी की भी नहीं सुनती। ज़िद्दी, हठीली, परले सिरे की निलज्ज। वह किसी का कहना भी नहीं मानती।

राणा—हां मेरी माता को तो इसकी पहले से ही शिकायत है। वह इसको दोषी और सब्ज़ क़दम भी बताती है। पर मैं क्या करूँ! वह स्त्री है मैं सख्ती भी नहीं कर सकता। रैदास बड़ा विख्यात भक्त है। रानी झाली भी तो उसकी चेली होगई है। और इसी के कारण अनेक ब्राह्मण और क्षत्री भी उससे दीक्षा ले चुके हैं। "हरि को भजे सो हरि का होई। जाति पांत पूछे ना कोई।" वह चमार हुआ तो क्या? और ब्राह्मण हुआ तो क्या?

दयाराम—श्री महाराज! आपको जिभ्या से यह बात शोभा नहीं देती। राणा का कुल सूर्यवंशी। रामचन्द्र जी की सन्तान हिन्दुओं का सूर्य! हिन्दू और एक चमार के शिष्य होने का गर्व करे!

राणा—भक्तों की कोई जाति नहीं होती। "नीच नीच

सब तर गये संत चरण लौ लीन। जाति के अभिमान में डूबे सकल कुलीन।

दयाराम—आप ऐसा कहते हैं! अफ़सोस जमाना बदल गया। जब हिन्दु पति की ही यह धारणा है! तो "बस हो चुकी नुमाज़ मुसल्ला उठाइये"।

राणा—फिर मैं क्या करूं? तुम्हारी क्या राय?

दयाराम—मीरा को अभी से रोक दीजिये। वह रैदास के पास जाने आने न पावे। रानी से कहियै उसकी निगरानी रक्खें अपनी बहिन ऊदाबाई को तईनात कीजिये। समझाती बुझाती रहे। महारानी की दो बांदिया हैं चम्पा चमेली उनको मीरा की चौकसी रखने का आयसु दीजिये।

राणा—यदि इस पर भी वह न मानी तो फिर?

दयाराम—मानेगी क्यों नहीं! अभी उसकी बाल अवस्था है। जिस राह पर लगाइयेगा लग जायगी अभी वह कोरी गजी है। जैसा रङ्ग चढ़ाओगे चढ़ जायगा।

राणा—अच्छा मैं माताजी की भी सम्मति लूंगा और यथा सम्भव इस की रोक थाम करूँगा। तुम लोग भी निगाह रखना कि मीरा रैदास की कथा में जाती है या नहीं!

दयाराम—सत वचन। जो आज्ञा।

(सिर झुका कर चले जाते हैं)

दूसरा सीन

(महल, ऊदाबाई, चम्पा चमेली, मीरा आदि)

ऊदा—भाभी तू रैदास जी के यहां जाती है?

मीरा—फिर क्या हुआ?

ऊदा—तू राणा की रानी है। सब में बड़ी। तेरा कुल सब में श्रेष्ठ है। तुझ को क्या पड़ी है जो इन साधुओं के संग को जाती

है। हम सब तेरे सगे सम्बन्धी हैं। हर समय तेरी सेवा को तत्पर हैं। तू वहां न जाया कर।

❀ मीरा-भजन ❀

मेरे गिरधर गोपाल दूसरा न कोई।
जाके सिर मोर मुकट मेरा पति सोई।
तात मात भ्रात बन्धु अपना नहिं कोई॥
छांड़ि दई कुल की रीति क्या करि है कोई।
संतन ढिंग बैठ २ लोक लाज खोई॥
अंसुअन जल सींच सींच प्रेम बेल बोई।
अब तो बेल फैल गई आनंद फल होई॥
आई मैं भक्ति काज जगत देख रोई।
दासी मीरा गिरधर गुपाल तारो प्रभु मोई॥

ऊदाबाई—रानी तू कहती क्या है? क्या हम सब लोग तेरे अपने नहीं हैं?

मीरा—झूंठा जग का नाता है।
न किसी का कोई बन्धु भ्राता है।
मैंने इसी हेतु अपने चितको हटाया है।
और उसको राम नाम में लगाया है।

भजनः—मेरे तो एक राम नाम दूसरा न कोई।
दूसरा न कोई राम दूसरा न कोई॥
१—भाई छोड़ा बन्धु छोड़ा छोड़ा सगा सोई।
साधुन संग बैठ २ लोक लाज खोई।
२—भक्त देख राजी भई जगत देख रोई।
प्रेम नीर सींच सींच माया बेल धोई।
३—दही मथ घृत काढ़ लयो डार दई छोई।
माखन माखन मार रई छाछ पीये कोई॥

४—अब तो बात फैल गई जाने सब कोई।
मीरा राम लगन लगी होनी हो सो होई॥

ऊदाबाई—तू इस आयु में मुझ से भी बहुत चतुर है। तेरी भक्ति धन्य है! पर लोग तुझ को क्या कहते हैं? तुझे कुछ खबर भी है?

मीरा—(हँस कर) भजन

१—मेरे मन राम नाम बसी। तेरे कारण श्याम सुन्दर लोंगा हँसी।
२—कोई करे मीरा भई बावरी कोई कहे कुल नसी।
कोई कहे मीरा दीप आगरी नाम पियासों रसी॥
खांड़ धार भक्ति की न्यारी काढ़े जम फंसी।
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर शब्द सरोबर धँसी॥

ऊदाबाई—❀भाभी मीरा! कुल ने लगाई गाल। ईडरगढ़ का आया जो औल्हना।

मीरा-ऊदाबाई! थारे म्हारे नातो नाँह। बासु बसिया का आया औल्हना।

ऊदा-भाभी मीरा! साधां का संग निवार। सारो सहर थारी निंदा करे।

मीरा—बाईऊदा! करे तो पर्या झक मारे। मन लाग्यो रमता रामसों।

ऊदा—भाभी मीरा! पहरुनी मौतियां हार। गहणो पहणा रत्न जड़ाव को।

मीरा—बाई ऊदा! छांड़ियो मां मोतियां हार। गहणा तो पहणा सील संतोष को।

ऊदा—भाभी मीरा! लाजे लाजे गढ़ चित्तौड़। राणा जी लाजे गढ़रा राजो री।

❀ यह वार्तालाप माड़वाड़ी भाषा में है। बड़े विस्तार से है। हमने केवल उसका कुछ अंश वह भी सरल नक़ल कर दिया है। जो चाहें मीराबाई की वाणी को पढ़ें।

मीरा–बाई ऊदा ! तरियो ! तारियो ! गढ़ चित्तौड़ । राणा जी गढ़ को राजो री ।

ऊदा–भाभी मीरा ! लाजे लाजे थारा माय न बाप । पीहर लाजे जो थारो मटेरतो ।

मीरा–बाई ऊदा ! तारियो तो भाइन बाप पीहर तारियो जो मटेरतो ।

चम्पा–मटेरतानी जी ! राणा नाराज़ हैं । वह नहीं चाहते कि आप साधुओं के संग में जांय ।

मीरा–मैंने सब सुन लिया । पर मेरा राणा गिरधर गोपाल तो कहता है कि साधुआं सतसंग कर ।

चमेली–आप मालिक हैं जो चाहें करें । हमारा केवल समझाने का काम था ।

मीरा–भजन:–बरजी मैं काहू की नाह रहूँ ।

(१) सुनो री सखी तुम चैतन होइ के मन की बात कहूं ।
(२) साध संगति करि हरि लऊँ जग से मैं दूर रहूं ।
(३) तन मन धन मेरा सब ही जावे भल मेरो सीस जहूँ ।
(४) मन मेरो लाग्यो हरि के भजन में सब केमैं बोल सहूँ ।
(५) मीरा प्रभु गिरधर नागर सतगुरु सरन रहूँ ।

चम्पा–रानी जी ! राणा का हुक्म है कि हम दोनों सखी रात दिन आपकी सेवा में उपस्थित रहें ।

मीरा–यों क्यों न कहो कि तुम मेरे चौकी पहरे की आई हो । मुझको इसकी चिंता नहीं, जो जिसके जी में आवे वह करो । मैंने तो जो सोचा है वह करूंगी और कर दिखाऊँगी ।

ग़ज़ल:–प्याला शराबे बेखुदी अब तो पिया जो हो सो हो ।
दामने अक्लो होश सब चाक हुआ जो हो सो हो ।
सुख की चैन की हविस बाक़ी रही नहीं नाम को ।
जानो जिगर निसार ग़म दिल से किया जो सो हो ।
हया शर्म सब मिट गये इनसे ग़रज़ नहीं रही ।

राह लो अपनी सिखाओ कोई क्या हमने किया जो हो सो हो।
दुनियाँ के कैदो बन्द को कर दिया पास पास जब।
उससे न वास्ता रहा चाहे खुदा जो हो सो हो।
इच्छा जीने की नहीं फिर मौत का डर क्या करें।
पंथ सतगुरु में जीवित मरे जो हो सो हो।

तीसरा सीन

(राणा और उसके सलाही)

—राणा—

बताओ मीरा का अब चाल ढाल करी उसने कुछ भी अपनी सँभाल।

—दयाराम—

कहें क्या वह दिल की बड़ी है ख़राब, महारानी दुखी हैं उससे जनाब। समझाया बुझाया मनाया बहुत, पथ भ्रष्ट होना हटाया बहुत। पर काम हिकमत न आई कोई, है मीरा में हजारत बुराई कोई। मनाने से हरगिज़ नहीं मानती, वह कहती है मैं कुछ नहीं जानती। साधु का संग हैं उसके पसंद, नसीहत हुई कोई नहीं कारबंद। वह हरकत से बाज़ अपने आती नहीं, किसी को दिल में अपने लाती नहीं। न लज्जा का शर्म का कुछ ख्याल, न छोड़ेगी हरगिज़ कभी अपनी चाल।

राणा—ग़ज़ब है! करूं अब मैं तदबीर क्या।
हक़ीक़त में नादा है यह बद बला॥

—बीजावर्गी बनियां—

सज़ा दीजिये सख्त रैदास को, जभी होश मीरा को एक दम में हो।
कथा वार्ता की मचाई है धूम, हर वक्त संग उसके रहता हजूम।
आदमी बड़ा सिद्ध साधक वह, अजब एक शान और आदर का वह।

—गौड़—

मगर सोच कर कीजियेगा यह काम, कि रैदास इस जगह है नेक

नाम। बुरा है नहीं वह मर्दे खुदा, नहीं उसने की आप की कुछ ख़ता। है मीरा का इसमें सरासर क़सूर, उसे रखिये रैदास से आप दूर।

गूजर-बताता हूं मैं आपको एक सलाह।
उसी से बस होगा हमारा निबाह॥

राणा-बता मैं सुनूं कुछ तेरी बात को।
मुमकिन है उससे कुछ लाभ हो॥

गूजर-हर सुबह को मीरा के पास माली फूलों की टोकरी ले जाता है। उसमें एक कौड़ियाले नाग को रखवा दीजिये। मीरा उससे हाथ लगायेगी। सर्प डस लेगा। और उसका काम तमाम हो जायगा। न रहे बांस न बजे बांसुरी। समझाने बुझाने से कुछ काम न निकलेगा।

राणा—बहुत ठीक! ऐसा ही कर। यह राय मुझे भी पसन्द है।

चौथा सीन

(मीरा, ऊदा, केतकी, माली, सास वग़ैरा)

माली—महारानी जी! यह ठाकुर को चढ़ाने के लिये फूल हाज़िर हैं?

मीरा—ला सामने ला।

ऊदा—हां! हां! ख़बरदार टोकरी को हाथ न लगाना।

मीरा—क्यों?

ऊदा—मैं सुन चुकी हूँ। फूलों में सांप छिपा बैठा है। गूजर ने राणा को सलाह दी है। और उसने विषधर सर्प को छिपाकर भेजने की आज्ञा दी है।

मीरा—क्यों माली! क्या यह सत्य है?

माली—जान की अमान पाऊं ! इसमें मेरा दोष नहीं है।

मीरा—केतकी ! तू सुनती है । देख राणा जी इस प्रकार सताने और दुख देने को तुले हुए हैं ! आज से पूजा के फूल तू लाया कर ।

केतकी—जो आपकी आज्ञा ! अब यहाँ खैरियत नज़र नहीं आती । जब राणा जी ही ऐसे ओच्छे कामों पर उतर आये तो किस को क्या कहा जाय ।

* मीरा *

कहो यह राणा से जाके माली यह ज़ोरो सितम वो अताब कब तक।
ज़ुल्म यह कब तक रहेगा हम पर रहेगा आख़िर अज़ाब कब तक।
है दोष क्या क्या ख़ता हमारी सहें यह दुख हम तुम्हारे क्यों कर।
बताओ यह ख़ातिर क्या तुम्हारी यह हिसाबो किताब कब तक।
नहीं किसी को सताया हमने न दिल किसी का दुखाया हमने।
तुम आंखें खोलकर तो देखो ऐसे ग़फ़लत के ख़्वाब कब तक।
यह संसार इस में दो दिन का रहना नहीं ज़िन्दगानी का कुछ ठिकाना।
इस जाहो हशमत पै तुम न भूलो रहेगा फिर यह हुबाब कब तक।
नहीं किसी का हमें भरोसा आस भी क्या करें किसी की।
छिपायें क्यों मन की बात अपने डालोगे उसपै नक़ाब कब तक।
मालिक से लौ हम लगा चुके हैं अपने आपे से जा चुके हैं।
यह बातें सीधी सच्ची राणा ! कहाँ की शर्म और हिजाब कब तक।
दीन हूँ दुखी हूँ बेबसो बेकस अपने दुख से हूँ आप दुखिया।
करोगे जान बूझ कर मुझे तुम आख़िर ख़ाना ख़राब कब तक।

माली—महारानी जी ! मुझको क्षमा करना। मैं निर्दोष हूँ कहने को मैं सब कुछ कह दूँगा । मगर राणा के साथ जो दो चार आदमी रहते हैं । वह अपनी हरकत से बाज़ आने वाले नहीं। तुम चौकस रहना । कौन जाने तुम्हारे साथ और क्या २ बुरा सलूक न कर बैठें ।

मीरा—तू जा ! अपना काम कर-जो मालिक की इच्छा होगी वह होगा। (वह चला जाता है)

*ऊदा—बरज बरज मैं हारी ! भाभी मानो बात हमारी। टेक
राणा रोष किया थां ऊपर साधुआं संग मत जारी।
कुल को दाग लगे छै भाभी निन्दिया हो रही भारी।
साधुआं संगरे बन बन भटको लाज गुमाई सारी।
बड़ा घरां थों जन्म लियो छै नाचो दे दे तारी।
बर पायो हिन्दुआंनु सूरज थें काई मन कारी।
मीरा गिरधर साध संग तज चलो हमारी लारी।

मीरा-मीरा बात नहीं जग छानी ऊदा बाई समझो सुगड़ सयानी।
साधु मात पिता कुल मेरे सजन सनेही ज्ञानी।
संत चरण की सरन रैन दिन सत कहूँ मैं बानी।
राणा ने समझाओ जाओ मैं तो बात न मानी।
मीरी के प्रभु गिरधर नागर सन्तों हाथ बिकानी।

ऊदा—भाभी बोलो बचन बिचारी।
साधुआं की संगत दुख भारी मानो बात हमारी।
छाप तिलक गले हार उतारो पहरो हार हजारी।
रतन जड़त पहरो आभूषण भोगो भोग अपारी॥
मीरा जी थें से चलो महल में थाने सोगन म्हारी।

मीरा—भाव भक्ति भूषण सजे सील संतोष सिंगार।
ओढ़ी चूनर प्रेम की गिरधर जी भरतार।
ऊदा जी मन समझ जाओ अपने धाम।
राज पाट भोगो तुम्हीं हमें न तासो काम॥

ऊदा जाती है।

* यह भी असली किताब से लिखा है।

मीरा—म्हाना गुरु गोविन्द दी आन गोर गुना पूजान।
सास—और जो पूजें गौर जा थें क्यों न पूजे गौर[१]।
मन बनछित फल पावसी जी थें क्यों पूजे और॥
मीरा—नहिं हम पूजें गौर जियाजी। नहीं पूजा अनदेव।
पर्म सनेही गोविन्दो थें कांई जानू म्हारो भेव[२]॥
सास—बाल सनेही गोविन्दा साध सन्त को काम।
थे बेटी राठौर की थाने राज दियो भगवान॥
मीरा—राज करे जिया ना करने दीजै मैं भक्तां री दास।
सेवा साधु सन्त की राम मिलन की आस॥
सास—लाजे पीहर सासरो मायत नू मौसाल[३]।
सब ही लाजे मटेरताजी थां सों बुरा कहे संसार॥
मीरा—चौरी करां न मारगी नहीं मैं करा अकाज।
पुण्य के मारग चालती झक मारौ संसार॥
नहिं मैं पीहर सासुरे नहिं पिया जी री आस।
मीरा ने गोविन्द मिलिया जी गुरु मिलिया रैदास॥

(सास विवश होकर जाती है)

१—गुनगोर २—भेद ३—मौसी का घर।

इस सास मीरा के वार्तालाप का आशय यह है कि सास गुनगोर पूजा कराना चाहती है। मीरा मनें करती है। सास कहती है तैंने सब की लाज खोदी। मीरा कहती है मैंने चोरी नहीं की न किसी का खून किया। सत् पंथ पर चलती हूँ।

चौथा तमाशा

पहला सीन

(राणा और उसके साथी)

दयाराम—कई तरकीबें सोचीं काम फिर भी नहीं निकलता है।
न दाव उस पर चला उलटे अपना दम निकलता है।
गौड़-हठीली है बड़ी ज़िद्दिन है मीरा का दिल पत्थर का टुकड़ा है।
सीधी हो कुछ भी तो मतलब अपना कुछ निकलता है।

गूजर—डसेगा सांप कब उसको वह खुद जादू से है भरपूर।
क़सम है उसके आगे सांप का खुद दम निकलता है

बनियां—नहीं उस पर दुश्मनी का भी हरगिज़ दाउ चलता है।
दुशमन भी प्रेम से उसके खुद बँध कर निकलता है।

राणा—करें तदबीर क्या ऐसी कि वह बस में मेरे आये।
तुम्हारी बातें सुनकर तो मेरा अब दम निकलता है।

दयाराम—महाराज! मैं क्या कहूँ! आपने जिन बांदियों को मीरा की चौकसी के लिये भेजा था। वह भी उसके जादू में आगईं। वह खुद उसके साथ साधु संग में जाती हैं। और यहां तक सुना है कि वे भी रैदास की चेली होगईं। और मीरा से प्रेम प्यार रखती हैं।

बनियां—ऊदा बाई से भी काम बनता नहीं दीखता। उसी ने मीरा से कहा था कि राणाजी ने फूल की टोकरी में सांप छिपा कर भेजा है। हाथ न लगाना।

गूजर—महारानी जी ने चाहा था कि वह महल में चलकर गुनगोरे की पूजा करे। पर मीरा ने साफ मने कर दिया। वह सिवाय रैदास की संगति के और कुछ नहीं चाहती। और कोई उसको रोक भी नहीं सकता।

राणा—इन बातों से कुछ मतलब नहीं निकलता । सोचो अब क्या करें। जो वह हमारा कहना माने।

दयाराम—अगर वह राज़ी से हमारा कहना मान जाय तो अच्छा है। वरना विष देकर उसका काम तमाम सदा के लिये कर दिया जाय। मैं मीरा की सब बातों को जान गया हूँ। वह चरणामृत पीने की बड़ी लालसी है। और जब उसको हलाहल विष चरणामृत के नाम से दिया जायगा तो वह चाउ से उसको पी जायगी।

बनियां—चुप धीरे २ बात करो ? कोई सुन न ले !

दयाराम—इससे क्या हर्ज है ? मैं अपना काम किसी न किसी तरह से कर ही लूंगा।

राणा - ठीक है। कल विष का प्याला दो। मैं भी इस राय को पसंद करता हूं।

दूसरा सीन

(दयाराम का विष लाना, मीरा का ग़ट ग़ट पीजाना)

मीरा—(अपने मन में) हाय ! गिरधर गोपाल ! तुम्हारे भक्त को और यह दुख ! आखिर इस घोर अत्याचार का भी कोई कारण है ? क्यों मुझको इतने कष्ट कलेश दिये जा रहे हैं ? मैंने किसी का क्या बिगाड़ा। जिसका यह दण्ड मुझे दिया जा रहा है। इसमें कुछ न कुछ भेद ज़रूर है। जिसको कोई प्रगट नहीं कर सकता। साधुओं के संग का छुड़ाना तो एक बहाना मात्र है। अच्छा जो हो। यह भी एक परिचय है। कसौटी है।

मेरे दिल में जल रही है आग बाहर तपन का निशां नहीं।
बढ़े हैं रंजो ग़म अब तो इतने कि आंसू तक भी रवां नहीं ॥
जो मरे को मारा तो क्या किया जो जला हो उसका जलाना क्या।
मैं चली हूँ मौत के मुँह में खुद कि क़यामें उम्रे रवां नहीं ॥

यह दुनियाँ है चंद रोज़ा, नहीं है यहाँ किसी का ठिकाना।
जो कभी चूर थे ग़रूर में अपने, उनका रहा आज निशां नहीं॥

केतकी–महारानी जी! आज राणा की तुम पर बड़ी महर है। जो दयाराम पंडा आया है और ठाकुर जी का चरणामृत लाया है, कहता है खुद राणा ने भेजा है।

मीरा– (मुस्कराकर) अच्छा ठीक है। लाओ! अहो भाग्य! राणा को चरणामृत भेजने की सूझी।

दयाराम–लीजिये! मैं खुद ही लाया हूँ।

मीरा–अपने जीवन भर में आज तुम ने पंडे की रीति निभाई है।

ऊदा–भाभी जी! ख़बरदार! चरणामृत न पीना। यह तो विष हलाहल है। मुझ को इसका भेद मालूम है।

मीरा–बाई जी! चुप! चरणामृत! और मैं न पीऊँ। यह मेरी कसोटी है। यदि यह चरण का अमृत है तो मैं जीती रहूंगी। और यदि यह विष है तो जीवन का क्या प्यार है। लाओ जी! दो कटोरा। मीरा (दयाराम के सामने पीकर) धन्य भाग! भला हुआ। (दयाराम मन ही मन जादू चल गया)।

भजनः–राणा! तें ज़हर दया हम जानी! टेक

१–जैसे कंचन दहित अग्नि में निकसत बारा पानी।
२–लोक लाज कुल काल जगत को दई बहाय जस पानी।
३–अपने घर को परदा करले मैं अबला बौरानी।
४–तरकश तीर गल्यो मेरे हियरे गरक गयो सनकानी।
५–सब संतन पर तन मन वारूं चरण कमल लपटानी।
६–मीरा के प्रभु गिरधर नागर दासी अपनी जानी।

दूसरा भजन

शिशोदियां* राणों प्यालो म्हांको क्यों रे पठायो ।।टेक
भली बुरी तो मैं नहिं कीनो राणा क्यों है रिसायो।
थाने म्हांने देह दियौ है ज्यों ऐ हरि गुण गायो ।।
कनक कटोरा ले विष घोल्यो दयाराम पंडा ले आयो।
उठी उठी तो मैं नहिं देख्यों कर चरणामृत पायो ।।
आज कालि की मैं नहिं राणा ! जद यह ब्रह्मण्ड छायो ।
मटेर देता जन्म लयो है मीरा नाम कहायो ।।
प्रहलाद की प्रतिज्ञा राखी खम्भ फाड़ बेगो धायो ।
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर जिनको विरद बढ़ायो ।।

तीसरा भजन

हेरी मोसों हरि बिन रह्यो न जाय । टेक
१–सास लड़े मेरी नंद खिजावे राणा रह्यो रिसाय ।
पहरा भी राख्यो चौकी बिठायो ताला दियो लगाय ।।
पूरब जन्म की प्रीति पुरानी सो क्यों छोड़ी जाये ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर और न आवे मेरे दाये ।।

ऊदा–अरी भाभी ! तूने तो जहर पी लिया । अब तक नहीं मरी । हाय मेरी भाभी ! तू अब न जी सकेगी ।

मीरा–बाई ! चिंता न कर ! मेरे लिए मृत्यु नहीं है । मैं न मरूंगी । गिरधर गोपाल ने जिस हेतु यह जीवन दिया है वह कर छोड़ूंगी ।

भजनः–मीरा मगन भई हरि के गुन गाय ।
सांप पटियारा राणा भेज्यो मीरा हाथ दियो जाय ।
न्हाय धोय जब देखन लागी सालिगराम गई पाय ।
जहर का प्याला राणा भेज्यो अमृत दीन्ह बनाय ।

* राजपूतों का कुल

न्हाय धोय जब पीवन लागी हो गई अमर अचाय।
सूल सेज राणा ने भेजी दीजो मीरा सुलाय।
शाम भई मीरा सोवन लागी मानो फूल बिछाय।
मीरा के प्रभु सदा सहाई राखें विघन हटाय।
भाव भजन में मस्त डोलती गिरधर पे वलि जाय।

ऊदा– (रोती हुई) क्षमा कर भाभी क्षमा कर ! मैंने तेरा बड़ा अपराध किया है।

मीरा–कुछ नहीं ! तैने मेरा क्या अपराध किया है।

ऊदा– (पांव पकड़ कर) मुझे भी अपने साथ गिरधर नागर की दासी बना ले।

मीरा–चल कल गुरु रैदास जी के पास तुझे भी ले चलूं।

चम्पा–महारानी ! हम पर भी दया दृष्टि हो।

मीरा–हां ! तुम भी कल मेरे साथ केतकी को लेकर गुरु के दर्शन को चलो।

तीसरा सीन

(राणा और मीरा)

राणा–भाभी मैंने तुझ को बहुत सताया। पर तू राह पर न आई। क्या तुझको अपने कुल की लाज और प्रतिष्ठा का खयाल नहीं है।

मीरा–भजन:–राणा जी मैं सांवरे रंग राची। टेक

१–साज सिंगार बांध पग घुंघरू लोक लाज तज नाची।
२–गई कुमति लई साध की संगति भक्ति रूप भई सांची।
३–गाय २ हरि के गुण निसदिन काल ब्याल सों बांची।
४–अन वन जग सब खारी लागत और बात सब कांची।
५–मीरा श्री गिरधरनलाल सों भक्ति रसीली जांची।

राणा–अच्छा ! जो हुआ सो हुआ ! मेरे संग महल में चल।

मीरा-भजनः-राणा जी मैं गिरधर रे घर जाऊँ।
गिरधर म्हारो सांचो प्रीतम देखत रूप लुभाऊं।
रैन पड़े तब ही उठ जाऊँ भोर भये उठ आऊँ।
रैन दिना वाके संग खेलूं ज्यों रीझे त्योंन रिझाऊं।
जो पहरावे सोई पहरूं जो दे सोई खाऊं।
मेरी उनकी प्रीति पुरानी उन बिन चल न रहाऊं।
जहाँ बैठावै तहां मैं बैठूँ बेचे तो बिकजाऊँ।
जन मीरा गिरधर के ऊपर बारबार बलिजाऊँ॥

राणा—तू भक्ति भाव कर। मैं रोकना नहीं चहता। हां महल से बाहर जाने की आज्ञा नहीं है।

॥ मीरा भजन ॥

१-राणाजी मैं तो गोविन्द का गुण गासियां।
२-चरणामृत को नियम हमारो नित उठ दर्शन जासियां।
३-हरि मन्दिर में नृत करासा घूंघरीया घमकासियां॥
४-राम नाम का जहाज चलस्या भव सागर तर जासियां।
५—यह संसार बाड़ का कांटा ज्यां संगत नहीं जासियां।
६-मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर निरख परख गुण गासियां।

राणा—देख भाभी! कहना मान जा। हठ अच्छी नहीं होती। यह पागलपने का काम है।

॥ मीरा-भजन ॥

१-राम तने रंग राची राणा मैं तो सांवरिया रंग राची।
२-ताल पखावज मृदंग बाजा साधुआं संग रे नाची॥
३-कोई कहे मीरा भई है बावरी कोई कहे मद माती।
४-विष का प्याला तेने भेज्यो अमृत जान पियासी॥
५-मीरा के प्रभु गिरधर नागर जन्म जन्म की दासी।

राणा—तू जानती है कि मैं राणा हूँ। सब मेरी आज्ञा पालन करते हैं। तुझको भी ऐसा ही करना उचित है।

॥ मीरा भजन ॥

राणाजी अब न रहूँगी तेरी हठ की।
साध संग मोहि प्यारा लागे लाज घूंघट की॥
पीहर मटेरता छोड़ा अपना सुरत निरत दोऊ चुटकी।
सतगुर १मुकर दिखाया घट का नाचूंगी दैदै चुटकी॥ १शीशा
हार सिंगार सभी ले अपना चूड़ी कर की पटकी।
मेरा सुहाग अब दरसा मोको और न जाने घट की।
महल अटा राणा! ना चहिये साड़ी रेशम पटकी॥
हुई दिवानी मीरा डोले कैंस लटा सब छिट की॥

राणा–देख यह अवज्ञा अच्छी नहीं। तू पछितायगी।

॥ मीरा भजन ॥

१—कोई निन्दो कोई बन्दो मैं चलूंगी चाल अनूठी।
२—सांकरि गली में सतगुर मिलिया क्योंकर फिरूं अपूठी।
३—सतगुर संग बात मोहि करते दुर्जन लोगां डीठी॥
४—मीरा के प्रभु गिरधर नागर दुर्जन जलें अंगीठी॥

राणा—अगर तू नहीं मानती तो जा नज़र से दूर हो। मेड़ते चली जा। यहां तेरा रहना अच्छा नहीं यह मेरी अंतिम आज्ञा है। अगर तू मर जाती तो अच्छा होता। यह कलंक असह्य है।

मीरा—बहुत अच्छा तुम राजा हो। यह तुम्हारा देश है। तुम मुझको देश निकाला देते हो। मैं यहां न रहूँगी। तुम राजा हो अपनी प्रजा के स्वामी हो। तुमने मुझको मर जाने की आज्ञा दी है। तुम्हारी आज्ञा शिरोधार्य! पर मैं मेड़ता क्या जांऊँ? अभी मेड़ता होकर आई हूं। लोग क्या कहेंगे? इस लिये अब आपका अंतिम हुक्म सुन कर जो जी में आवेगा करूंगी। चित्तौड़ में न रहूंगी। और न कभी लौट कर ही आऊँगी।

भजन–करम गति टारी नांहि टरे। टेक
१—सत वादी हरीचंद राजा नीच घर नीर भरे।
२—पांडव के प्रभु सदा सहाई हाड हिमालय गरे॥
३—जग्य किया बलि लीन इन्द्रासन सो पाताल चरे।
४—मीरा के प्रभु गिरधर नागर विष से अमृत करे॥

पाचवां तमाशा

पहला सीन

(मीरा बढ़े हुए दरिया का किनारा)

मीरा—(अपने मन में) राणा ने देश से निकल जाने का हुक्म दिया। राजपूत और राज पूतनियां राजा की आज्ञा उलंघन नहीं करतीं आधी रात के समय मैं घर से निकली। सिंह और बघेलों का भय नहीं किया। कैसी भयानक और अँधेरी रात है। हां! कृष्ण यह मेरी दशा। तुम को कैसे धैर्य बंधता होगा! मैंने इस समाचार को न ऊदा को सुनाया न केतकी को। कौन जानें वह क्या सोचेंगी। सम्भव था कि वह देश निकाले में मेरा सङ्ग देतीं। पर मुझको यह नहीं रुचता था। अब तो जो कुछ होना है होकर रहे। कौन किसका सङ्गी! कौन साथी! यदि भाग्य में बदा होता तो मेरी माता क्यों मरती। और प्राण पति भोजराज का बिछोह क्यों होता। राणा सांगा ही क्यों बाबर के समीप रण में हार कर जान खो देता। इन सबकी मृत्यु मेरे दुख दारुण का श्री गणेश थी। अच्छा मालिक की मौज! हरि इच्छा! यह भी सदा न रहेगी।

* ग़ज़ल *

ज़िन्दगी की राह में साथी है यह दिल चन्द रोज़।
यार के घर चलते हैं मंज़िल ब मंज़िल चंद रोज़॥

चार दिन की चांदनी है फिर अँधेरा पाख है।
बारा में दुनियां के हैं सब रगड़े झगड़े चंद रोज़ ॥
हौसले पस्त होने न दूंगी जब तक मैं जीती रहूं।
करलो मेरा कोई अकाज और अपयश चंद रोज़ ॥
सख्तियां झेलीं सही हैं आफ़त और मुसीबत बहुत।
हैं यह सब इम्तहान ताक़ते दिल चंद रोज़ ॥
दाता मेरे ! हिम्मत अता कर अपने रहमो कर्म से।
मैं न हूँ गुमराह चाहे भटकूं चंद रोज़ ॥

चित्तौड़ से भाग कर इतनी दूर निकल आई। बरसात की रात। बिजली कड़क रही है। मोर पपिये शोर मचा रहे हैं। चारों ओर घुप अँधेरा छा रहा है। सामने दरिया बह रहा है। पार भी जाऊं तो कैसे जाऊं। न नाव है न बेड़ा है। मेरी किशोर अवस्था ! और अबला स्त्री ! नन्हीं सी जान और यह विपत्ति ! अँधेरी रैन ! दरिया में घोर तूफ़ान और भंवर पड़ रहे हैं। कैसे हिम्मत करूं। मुझ दुखिया दीन की दुर्दशा का अंदाज़ा करने वाला कौन है ? जो इस समय मेरा सहायक हो ? हा दैव !

ग़ज़ल—आईं बलायें जान पे मेरे हज़ार आज।
बेचैन व बेबस है दिल बेक़रार आज।
काली घटायें छाई हैं किस ज़ोर शोर से।
मेरे जैसे हो गये सब दिन व रात आज।
किस ओर का इरादा करूं सूझता नहीं।
घबरा रहा है दिल मेरा बार बार आज।
ज़िन्दा हूँ मैं हर गोर ख़ाक के तले।
क्या कहदे कोई आगया रोज़े शुमार आज।
यारब ! मदद का वक्त है कर मेरी तू मदद।
करती हूं मैं दया का तेरे इन्तज़ार आज।

राणा ने इशारे २ में मुझ को मरने का आयसु दिया था।

अब इस से अच्छा कौन सा अवसर होगा। दरिया बाढ़ पर है। क्यों न इसमें कूद पड़ूँ। सिसक २ कर जान देने से क्या फ़ायदा! गिरधर गोपाल तेरी जय हो।

(धम से पानी में कूद पड़ती है)

दूसरा सीन

(प्रातःकाल, दरिया का तट, मीरा और ग्वाल बाल मंडली)

एक ग्वाला–यह लाश रात को ही बह कर आई दीखती है। पानी की लहरों ने इसको तट पर लाकर डाल दिया है।

दूसरा ग्वाला–यह स्त्री की शव प्रतीत होता है। पर देखो कैसी सुन्दर है! नखसिख से मनोहर है।

तीसरा ग्वाला–नहीं! नहीं! यह मुर्दा लाश नहीं दीखती कुछ २ सांसें आती हैं।

चौथा ग्वाला–चलो इस को गर्मी पहुंचायें। ताज्जुब नहीं कि जी उठे।

(ग्वालों की आवाज़ सुनकर मीरा आंखें खोल देती है)

मीरा–मैं यहां कहां?

एक ग्वाला–तुझको लहरें लाईं यहां।

दूसरा–तन में न रही जाँ।

तीसरा–गर्मी पाने पर आई तावो तवां।

चौथा–तू कौन है बता कुछ नामो निशाँ।

मीरा–(आंखें मलकर) ओहो मैं तो मीरा हूँ। अपनी याद भी बिसर गई! मैं जा रही थी वृन्दाबन। राह में आ गई दरिया और सघन बन। दरिया में गिर पड़ी और बह कर यहां चली आई। भईया मुझे बताओ? वृन्दाबन किधर है?

एक ग्वाला–क्या तू अहीरनी है?

मीरा–हां मैं अहीरनी सच्ची।

दूसरा–चल हमारे घर। हम लेंगे तेरी ख़बर।
तीसरा–जब अच्छी हो जायगी। पहुंचा देंगे वृन्दावन के नगर।
मीरा–अब मैं अच्छी हूं। मुझे कोई बीमारी नहीं है।
चौथा–अच्छा यह दूध पीले। जिससे शरीर में बल आवे।
मीरा–(दूध पीकर) तुम कौन हो? किस जाति के हो? मनुष्य हो कि देवता हो।
ग्वाले–(हंसकर) हम बाल गोपाल हैं। यहाँ गायें चराने आये हैं।
मीरा–तो अब मुझको वृन्दावन की राह दिखा दो। सीधी रास्ता बता दो?
ग्वाले—तू घबराय मत! हममें से कोई न कोई तेरे संग चलेगा। ज़रा ठहर जा। हम अपने माता पिता से आज्ञा ले आवें।
मीरा–तुम गाय चराओ। मेरा ध्यान न लाओ। मैं अकेली चली जाऊँगी।

एक ग्वाला–तू अकेली राह में कभी मत जा। स्त्री का यह काम नहीं।
दूसरा—राह कठिन है। इस पथ में चैन नहीं आराम नहीं।
तीसरा–हम सब तेरे सच्चे सेवक हैं। स्वार्थी और बेकाम नहीं।
चौथा–कहा मान ले मीरा! राह बड़ी बेढ़ड़ है कुछ आराम नहीं।
मीरा—मैं खुद ही चली जाऊंगी वृन्द्राबन। तुमसा इस दुनियां में ग्वालो! कोई नेक नाम नहीं।

एक ग्वाला–अच्छा भाईयो! तुम तो अपने २ घर जाओ, मैं मीरा को वृन्दावन ही पहुंचा कर वापिस आऊँगा। मेरे पिता से कह देना चिन्त न करें। यह स्त्री तो कृष्ण की भक्तिनि है इस की सेवा करना हमारा धर्म है।
शेष तीन ग्वाले–अच्छा भईया ज़रूर जाओ, मीरा को पहुँचा आओ।

मीरा– ग्वाले के साथ गाती हुई वृन्दावन को जाती है।

भजन— नंद नन्दन विलमाई। बदरा ने घेरी माई। टेक
१—इत घन गरजे उत घन गरजे चमकत बिजली सवाई।
२—उमड़ि उमड़ि चहुँ दिश से आये पवन चले पुरवाई।
३—दादुर मोर पपीहा बोले कोयल कूक सुनाई।
४—मीरा के प्रभु गिरधर नागर चरण कमल चितलाई।
भजन–२ मतवारो बादर आये रे। हरि का संदेसा नहीं लाये रे। टेक
१—दादुर मोर पपीहा बोले कोयल कूक सुनाये रे।
२—काली अँधियारी बिजली चमाके विरहन अति डरपाये रे।
३—गाजे बाजे पवन मधुरिया मेहा अति झड़ लाये रे।
४—काला नाग विरह तन फूंके मीरा के मन भाये रे।

तीसरा सीन

(बृन्दावन, रूप गुसाईं का मठ, साधु समाज)

मीरा—(बृन्दावन में)
भजन–बता दे सखी कौन गली गये श्याम ॥ टेक
१–ढूंढ़त ढूंढ़त देर भई है मिले न मोहि घनश्याम।
२–गोकुल ढूंढ़ि मैं मथुरा ढूंड़ी वृंदाबन मोहि शाम।
३–मधुबन में श्यामा बंसी बजावे सुन सुन मन हरषान।
४–मीरा के प्रभु गिरधर नागर आप मिलो यह ही जाम।

रूपगुसांई—(अपने चेले से) साधो ! यह कौन सुरीला राग गा रहा है ?
साधु–महाराज ! मेवाड़ से एक भक्तिनि आई है। आपका दर्शन करना चाहती है।
रूप गुसाईं–खेद है ! उससे जाकर कहो। मैंने प्रण किया है किसी स्त्री से न मिलने का।
साधु–मैंने उस से यह कहा था। उसने यह उत्तर दिया कि मैंने यह सुना है कि वृन्दावन में केवल एक पुरुष गिरधर नागर

हैं। शेष सब सखी रूप हैं। आज यह मालूम हुआ कि उन के और भी पट्टीदार मौजूद हैं।

रूप गुसाईं–क्या सत्य सत्य उसने ऐसा ही कहा है ?

साधु–हां महाराज ! ऐसा ही कहा है।

रूप गुसाईं–तब तो वह कोई बड़ी अनुभवि भक्तिनि प्रतीत होती है। चलो मैं उसके दर्शन को खुद ही चलता हूँ। (वह बाहर आकर मीरा को नमस्कार करता है)। नमस्कार है तुमको मीरा। तू कृष्णस्वरूप और राधास्वरूप है। मेरे अपराध को क्षमा करना।

मीरा–धन्य है महाराज ! मैं आपका दर्शन पाकर कृत्य कृत्य हो गई ! साधु मिले साहब मिले अंतर रही न रेख, मनसा वाचा कर्मणा साधू साहब एक। कबीर संगति साध की साहब आवें याद, लेखे में सोई घड़ी बाकी के दिन बाद ॥

रूप गुसाईं–क्या आप बृन्दावन में रहना चाहती हैं।

मीरा–यह गिरधर गोपाल के विहार का स्थान है। तीर्थ करने आई हूं। कुछ दिन बाद द्वारिका में जाकर विश्राम करूंगी।

रूप गुसाईं–अच्छा ! मठ में पधारिये। साधु जनों का समाज एकत्रित है।

मीरा–बहुत अच्छा ! (मीरा गुसाईं के संग भीतर जाती है)

साधु समाज–(भजन कीर्तन कर रहा है)

भजनः–मुर्ली धुन गाजा सूर[१] सुरत सर[२] साजा। टेक

१–निरखत कमल नैन नभ ऊपर शब्द अनाहद बाजा।
२–सुन धुन मैल मुकर[३] मन मांजा पाया अमी रस छाजा ॥
३–सूरत सिंध सोध[४] सत गाजा लख लख संत समाजा।
४–घट घट कुञ्ज पुञ्ज जहाँ छाजा[५] पिंड बृह्मंड बिराजा ॥

१–सूरदास २–तालाब ३–दर्पण ४–बनाकर ५–खुले हुए

५–फोड़ अकाश अलल[6] पछि भाजा उलट के आप समाज [7]।
६–ऐसी सुरत निरख निःअक्षर कोट कृष्ण तहां लाजा ॥
७–सूरदास सार लख पाया लख लख अलख अकाया।
८–सतगुरु लगन लगी घर आया सिंधमें बुन्द सामाजा ॥

॥ मीरा–(आप मुग्ध होकर गाती है) ॥

भजनः–भज मन चरण कमल अविनाशी। टेक
१–जो कुछ दीखे धरणि गगन बिच ते तो सब उठ जासी।
कहा भयो तीर्थ वृत कीन्हे कहा लय करवट कासी ॥
२–या देही को गर्व न करना माटी में मिल जासी।
या संसार चुहर[1] की बाजी सांज परे उठ जासी ॥
३–कहा भयो है भगुआ पहरे घर तज भये सन्यासी।
जोगी होय जुगत नहीं जानी उलटि जन्म फिर आसी ॥
४–अरज करूं अबला कर जोरे श्याम तुम्हारी दासी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर काटो जन्म की फांसी ॥

दूसरा भजन

राम नाम रस पीजै मनुआ राम नाम रस पीजै।
तज कुसंग सतसंग बैठ नित हरि चरचा सुनि लीजै ॥
काम क्रोध मद् लोभ मोह को चित से त्याग सब दीजै।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर ताहि के रंग में भीजै ॥

भजन ३

ऐसी लगन लगाय कहां तू जासी। टेक
१–तुम देखे बिन कल न पड़त है तलफ तलफ जिया जासी।
२–तेरी खातिर जोगिन हूँगी करवट लूगी कासी ॥
३–मीरा के प्रभु गिरधर नागर चरण कमल की दासी।

६–विहंग मार्ग ७–समाया आप में। १–चोर

भजन ४

१-तुम्हरे कारण सब कुछ छोड़्यौ अब मोहि क्यों तरसाओ।
२-ब्रह्म व्यथा लागी उर अँदर सो तुम आय बुझाओ॥
३-अब छांड़े नहिं बने प्रभुजी हंस कर तुरत बुलाओ।
४-मीरा दासी जन्म जन्म की अङ्ग सों अङ्ग लगाओ॥

भजन ५

कोई कछु कहे मन लागा। टेक
१-ऐसी प्रीत लगी मन मोहन ज्यों सोने में सुहागा।
२-जन्म जन्म का सोया मनुआ सतगुर शब्द सुन जागा॥
३-मात पिता सुत कुटम कबीला टूट गया ज्यों तागा।
४-मीरा के प्रभु गिरधर नागर भाग हमारा जगाजा॥

छटा तमाशा

पहला सीन

(मेवाड़, राणा का महल, दीवान व अन्य कर्मचारी)

राणा-बहुत नाजुक है हालत मेरी हंगामा है महशर का।
खुदा तक क्या? तार पहुँचा मेरे रोने के दफ़तर का॥
तमीज़ व अक़्ल खोकर होगया दीवाने की सूरत।
ख़बर है पांव की मुझ को नहिं कुछ होश है सरका॥
अपने बन के पराये सताते हैं और डराते हैं।
न बाहर का सहारा है ठिकाना भी नहीं घर का।
सदा खंजर व तीरे ग़म के वार होते हैं।
फिर भी असर कोई नहीं, किया दिल है पत्थर का॥
अंधेरी रैन के तूफ़ाँ में नईया ग़र्क होती है।
ठिकाना बादबां का क्या? सहारा क्या हो लंगर का॥

दीवान–महाराज ! आप बापा रावल के उत्तराधिकारी हैं। इतने अधीर और विचिलित क्यों होते हैं ? लड़ाई झगड़े बखेड़े तो क्षत्रियों की मीरास हैं। आपको इनकी चिंता न करनी चाहिये। हम लोग हित चित से, दिलो जान से सेवा को तैयार हैं।

राणा–मुझको इसकी लेष मात्र भी चिन्ता नहीं है। ख्याल किसी और ही बात का है।

दीवान–वह क्या है ?

राणा–क्या कहूँ ! ना तजुर्बेकार व बुरे संगियों की सम्मति से मैंने मीरा पर घोर अत्याचार किया है। रह रह कर मुझ को यह दारुण दुख सता रहा है। सारा मेवाड़ एक मुँह होकर कह रहा है कि यह सब आपत्ति विपत्ति मीरा जैसी भक्तिनि पर घोर अत्याचार का परिणाम है।

दीवान–सत्य वचन महाराज। प्रजा तो ऐसा ही कह रही है।

राणा–जुबाने ख़लक़ को नक्कारा खुदा का समझो ?

दीवान–निसंदेह ! श्री महाराज ! मीरा का नाम मेवाड़ में पहले इतना विख्यात नहीं था जैसा कि अब है। मैंने सुना है कि अब वह द्वारिका जी पहुँच गई। और रँछोड़ जी के मन्दिर की सेवा टहल करती है। द्वारका जी का हाल तो नारायण जाने। मेवाड़ की गली २ में उसके भजन गाये जाते हैं। और भीड़ की भीड़ लोगों की उसके दर्शन को द्वारकाजी चली जारही है।

राणा–मेरा दुर्भाग्य ! और दिनों का फेर ! कि मैंने उस निर्दोष ! अबला की क़दर न की। और व्यर्थ में उसको सताता रहा।

दीवान–पर अब पछिताने से क्या काम चल सकता है ?

राणा–क्यों ?

दीवान–इसलिये कि उसने मेवाड़ को सदैव के लिये त्याग दिया ! और प्रण कर लिया है कि वह अब इधर को मुँह न करेगी।

राणा—हाय ! इसमें भी मेरा ही दोष है। पर मुझ को यह आशा है कि अगर मैं खुद चलकर विनय करूं और उससे आने की प्रार्थना करूं तो वह आ जायगी । उस समय ही यह कलंक का टीका मेरे माथे से दूर हो जायगा ।

दीवान । तो श्री महाराज ! ऐसा ही करें ।

राणा—अच्छा तो कल द्वारका की तैयारी करें !

दीवान—सत्य वचन !

दूसरा सीन

(द्वारका, रंछोड़ जी के मन्दिर की सीढ़ी पर भजन गाती हुई मीरा राणा और उसके साथी साधुओं के वेष में)

मीरा—(गाती है)

मुमकिन नहीं राजे मोहब्बत अयां न हो।
दिल में है इश्क़ कैसे लबों पर अयां न हो ॥
क्या मुझ को हो उम्मेद भलाई की ग़ैर से ।
तू महरबां नहीं तो कोई महरबां न हो ॥
क्योंकर जफ़ा और वफ़ा का हो ऐतबार ।
मद्दे नज़र जो इनका कभी इम्तिहां न हो ॥
दिल में हविस है इश्क़ में हूँ तेरे यूं फ़ना ।
दुनियां में मेरा नाम न हो और निशाँ न हो॥
बहदत के मैकदे में पिला साक़िया वह जाम ।
महमां मैं तेरा हूँ मेरा तू मेज़बां न हो ।

भजन १

हेरी मैं तो प्रेम दिवानी मेरा दर्द न जाने कोय । टेक
१—सूली ऊपर सेज हमारी किस विधि सोना होय ॥
गगन मंडल पर सेज पिया की क्यों कर मिलना होय ।

२–घायल की गति घायल जाने के जन लाई सोय।
जौहरि की गति जौहरि जाने कै जिन *जौहर होय ॥ *मोती
३–दर्द की मारी बन बन डोलूं बैद मिला नहिं कोय।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर जब बैद संवलिया होय ॥

भजन २

गोविंद कबहुँ मिले पिया मेरा। टेक
१–चरण कमल को हँस हँस देखूं राखूँ नयनन नीयरा।
निरखण की मोहि चाव घनेरी कब देखूं मुख तीरा ॥
२–व्याकुल प्राण धरत नहीं धीरज मिल तो मीत सवेरा।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर ताप तपन बहुतेरा ॥

राणा–राज भक्तिनि ! तुझको नमस्कार !
मीरा–(चौक कर) नमस्कार साधु ! नमस्कार !
राणा–तेरी जय हो।
मीरा–साधु मैं ग़रीब कंगालिनी हूँ ! आपकी क्या भेंट धरूँ ? मज़लूम हूं, सताई हूँ, आफत रसीदा हूँ, बे होश व बे हवास हूँ अज़खुद रसीदा हूँ। बेबस हूँ, बेकस हूं, गदा हूँ, फ़क़ीर हूँ, विरह की आग्न से मैं दिले तईदा हूँ।
राणा–(सिर से पगड़ी उतार कर और चरणों में शीश नवाकर) मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।
मीर—(राणा को पहँचान कर) राजन ! तुम यहाँ कहां ?
राणा—हैरान हूं परेशान हूँ शरमसारों में हूं, एमालों से अपने मैं बड़ा ज़लील व ख़्वार हूँ। ख़ता मेरी बख़शो न बख़शो इख़्त्यार, मैं तेरा बन्दा गुनह गारों में हूं। किस तरह करूँ फ़र्याद कुछ नहीं जानता। ऐ मेरी देवी ! मैं तो गिरफ्तारों में हूँ।
मीरा–महाराज ! मैं दिल से तुमको क्षमा करती हूं। जो कुछ हुआ

वह सब कृष्ण मुरारी जी की लीला थी। उसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं। तुम चित्तौड़ को वापिस जाओ। राजकाज का काम करो! मेवाड़ की दशा खराब है। तुमको चित्तौड़ छोड़कर आने का अवकाश कहाँ था?

राणा–तुम चित्तौड़ चलो! यह ही दिल से प्रार्थना है।

मीरा–यह क्यों? मैंने राजा का अंतिम आयसु सुनकर जन्म भूमि को जी से भुला दिया। मुझको जीवित न जानो। मृतक हूं। बेजान शव को चित्तौड ले जाकर क्या करोगे? अच्छा है अब मैं द्वारिका में ही गुप्त हो जाऊं। मैं क्षमा चाहती हूँ।

राणा–यह सत्य है। मैंने नादानी के वशीभूत होकर घोर अत्याचार किये। अब पछिताता हूँ।

मीरा–गिरधर नागर तुम्हारा कल्याण करें।

राणा–गिरधर नागर भी मुझ पर उसी समय कल्याण करेंगे जब तुम घर को लौट चलोगी।

मीरा–हुई वहशत चिमन से जङ्गल पर्वतों में आई।
लगी ठोकर क़दम को राह ना हमवार में आई॥
नहीं झूंठ पगली अगर कोई कहे मुझको।
कि सौदा इश्क का बाज़ार में लेने को मैं आई॥
जिगर दिल जिस्मो जां सब नज़र शाहे इश्क़ हैराना।
तुम्हारी छोड़कर रजधानी इस दरबार में आई॥
नहीं दुनियां से मतलब है ग़रज़कया अब यगाने से।
समझ कर बूझ कर मैं कूच ये दिलदार में आई॥
नशा वहशत का ज़ोरों पर हुई सरशार मैं उसमें।
कभी बन में कभी सहरा कभी कुहसार में आई॥

राणा–अगर तुम को वापिस चलने में आर है। तो मुझको भी यहां से जाना सख्त दुश्वार है।

मीरा–अगर तुम नहीं मानते तो अच्छा मैं मन्दिर में रंछोड़ जी से आज्ञा लेने जाती हूँ। जैसा आयसु होगा वैसा करूँगी। (मन्दिर में जाती है)

तीसरा सीन

मीरा–(रंछोड़ जी की मूर्ति के सामने)

भजन १

हरि तुम हरो जन की पीर। टेक

१—द्रोपदि की लाज राखी राख्यो तुम बढ़ायो चीर।
२—भक्त कारण रूप नर हरि धारचौ आप शरीर।
३—हृण्यकश्यप मार लीन्हों धरचौ नेक न धीर।
४—बूड़ते गजराज टारचौ कियो बाहर नीर।
५—दासी मीरा लाल गिरधर दुख जहाँ तहां पीर।

भजन २

साजन ! सुधि ज्यों जानो त्यों लीजे हो ॥ टेक

१—तुम बिन मेरे और न कोई कृपा रावरो कीजै हो।
२—दिवस न भूख रात नहीं निदरा यों तन पल पल छीजै हो।
३—मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर मिल बिछड़न नहीं कीजै हो।

राणा–(अपने कर्मचारी से) कई घन्टे बीत गये ! मीरा अब तक नहीं आई। चलो देखें तो वह मन्दिर में क्या कर रही है।

कर्मचारी–सत वचन महाराज !

राणा–(कर्मचारी के साथ मन्दिर में जाकर) यहां तो वह दीख नहीं पड़ती। कहाँ चली गई ?

कर्मचारी–आश्चर्य है ! पर देखिये उसके चीर का कुछ अङ्ग रंछोड़ जी की मूरति के मुख से निकल रहा है। क्या कहीं उसी में तो नहीं समा गई ?

राणा–जो न हो जाय सो थोड़ा है। मीरा वास्तव में सच्ची भक्तिनि थी। क्या आश्चर्य वह मूरति में समा गई हो। सम्भव है वह मेरे घोर अत्याचार को याद करके भयभीत हुई हो। हाय! मैंने यह क्या किया! भक्तों को दुख देने वाला! हरि सेवकों को सताने वाला! दुनियाँ मुझको बुरा कहेगी। और मैं सदा को इतिहास में अपने अत्याचार करने को बदनाम रहूँगा। तुम जाओ? अब मैं चित्तौड़ में जाकर किसी को क्या मुख दिखाऊं!

अब मैं उम्र अपनी रो रो रंज में ग़म में बसर करूंगा।
रो रो के इस जहाँ से आख़िर सफ़र करूंगा॥
बुराईयां सहूँगा बदनामियां सहूँगा।
काटूँगा रात ग़म से सुबह रंज से करूंगा॥
खौफ़े जुल्म से अपने मैं लाचार हो रहा हूँ।
बरबाद जिस्मो जां को बरबाद घर करूँगा॥
क्या मुंह दिखाऊं जाकर चितौड को मैं अपना।
मैं उसकी ओर को न अपनी नज़र करूंगा॥
अनजाम है सताने का भक्तों के यह सरासर।
जानते नहीं हैं उनको मैं यह ख़बर करुंगा॥

कर्मचारी–महाराज! यह सब बातें फ़िज़ूल हैं। जो होने को था हो गया। अब पछिताने से क्या लाभ? चलिये चित्तौड़ को लौट चलें। क्या जाने अब वहां की क्या दशा होगी।

राणा–अब क्या चलूँ! मुझको आशा नहीं है कि अब मुझको सुख चैन नसीब होगा?

कर्मचारी–पर आप राजा हैं। चलिये! शत्रु लड़ाई की तय्यारी में है। ज्यादा देर तक बाहर रहना ठीक नहीं है।

राणा–बहुत अच्छा! जो सलाह! यदि तुम्हारा ऐसा विचार है तो मैं चलने को तो चलता हूं। पर दिल को क्या करूँ?

रह रह कर चुटकी ले रहा है ! मुझको नहीं मालूम था कि मीरा के सताने का यह परिणाम होगा । किसी ने सच कहा है। "नतीजा कार बद का कार बद है।"

अच्छा चलो मैं चितौड़ चलूँ ।

(राणा वापिस जाता है। चितौड़ पर नये नये संकट आते हैं। वह बेबसी के साथ जीवन समाप्त करता है। और राणा की गद्दी के एक के बाद दूसरे कई राजे होते हैं। बनवीर के अत्याचार के बाद चितौड़ अकबर के हमलों से तबाह किया जाता है । और उदयसिंह जान बचाकर वहां से भाग जाता है । यह भक्तों के दुख देने, सताये जाने का दुष्परिणाम है)

समाप्त हुआ राज भक्तिनि नाटक।

दिल के जज़बे

दिल में आते हैं सवाल और जवाब आते हैं । दिल में आते हैं ख्याल और बहमो सुराब आते हैं । नींद में आते हैं इन्सान को अकसर सपने। हमको बेदारी में भी उस माह के ख्वाब आते हैं। बहरे दिल में जो लहरें हुईं मेरे पैदा । सितह पर लहरें उठीं ग़म के हुबाब आते हैं। महरवां जोशे जनूँ आप चले किस जानिब। हम भी तैयार हैं हम राहे रकाब आते हैं। हज़रते इश्क़ हुए हमारे आकर महमां। खूने जिगर पीने को क़बाब जिगर खाते हैं। पीरी में अब कहां लज्ज़ाते जवानी का पता। याद बड़े हमको अय्यामे शबाब आते हैं। रंजो ग़म कितने सहे आह बताऊँ क्यों कर गिन लो खुद आपको गर उनके हिसाब आते हैं।

भादों सावन की झड़ी लग गई जब हम रोये।
आंसू इन आंखों में क्या शकले तार आते हैं॥

महिमा बरनी न जाय साधो ! महिमा बरनी न जाय।

१—भव सागर एक अगम पंथ है बूड़ सकल जग जाई।
नवका शब्द बनाया गुरु ने जन भक्तों को लीन चढ़ाई॥

साधो महिमा बरनी न जाई।

२–माया जाल फांस है भारी। ऋषि मुनि सकल बंधाई।
जोग जुगति की खड्ग हाथ दे। काट दई बरयाई॥
साधो महिमा बरनी न जाई।

३–जड़ चैतन्य की ग्रन्थी अदभुत छूटत अति कठिनाई।
गुरु मत ज्ञान से गांठ खुली है मन रहा बहु हर्षाई॥
साधो महिमा बरनी न जाई।

४–जहां देखो अज्ञान पसारा। सबहि अविद्या खाई।
ज्ञान कटारी गुरु ने दीन्हीं ताको मार गिराई॥
साधु महिमा बरनि न जाई।

५–गुरु बल से रिपु दल हम मारे सतगुर हुए हैं सहाई।
राधास्वमी चरण शरण बलिहारी गुर महिमा क्या गाई॥
साधु महिमा बरनी न जाई॥

आशीर्वाद

मली जो ख़ाक माथे पै तो ख़ाकसार हुआ।
बड़े शौक़ से रहमत का ख्वास्तगार हुआ॥
गुनाह बख़्श दे यारब कि हूँ मैं बेहाल।
गुनहगार हुआ सख़्त शर्म सार हुआ॥
इन्द्री विषय मुझ को कर रहे हैं हैरां।
न आदमी कहो मैं गर्द गुबार हुआ॥
तेरी दीद की ख्वाहिश जो समा गई दिल में।
मिल आके में हमें तन चश्मे इन्तज़ार हुआ।
छुड़ा दे बन्धन से मुझे करदे अब महर ऐसी॥
तेरी दया कृपा का हे दाता! मैं उम्मेदवार हुआ।

बंदना

आंखों का तारा सबका सहारा हित चित से तू प्यारा है।
निर्मल शुद्ध बुद्धि हितकारी सुख सम्पति परिवारा है॥
घट घट वासी अनन्द राशी अविनाशी मंगलकारी।
रोम रोम में रमता जोगी रोग सोग से न्यारा है॥
गुणातीत गोविन्द मुरारी पुरुषोत्तम करुणा सागर।
जन मन रंजन दोष विभंजन प्रेम प्रीत भंडारा है॥
नाम लेत भव सिंधु सुखाहीं ध्यान धरत कलिमल भागे।
भव दुख मेटन दोष नशावन भक्ति रीति का सारा है॥
कर्म धर्म वैराग्य ज्ञान का "शिव" पूरण भंडारा है।
हे दयाल! कर दया की दृष्टि हृदय दुखी हमारा है॥

व्यवस्थापक की डायरी

(१) अगली तरङ्ग नं० १० बड़ी रोचक और रोमांचकारी है। मजाल नहीं कि पढ़ें और गद २ न हो जांय। राज भक्त गोपीचन्द और सुदामा चरित्र नाटक के रूप में ऐसे दर्शाये गये है जो पढ़ते ही बनते हैं। शौक से इन्तज़ार करें।

(२) जिन सज्जनों ने अपना वार्षिक चन्दा नहीं भेजा कृपा कर वह M. O. द्वारा भेज दें तो बड़ा उपकार हो। V. P. का नियम नहीं।

(३) इस मास में बक़ाया अङ्क सब भेज दिये गये। फिर भी जो रह गये हों वह लिख कर मंगालें। जवाब के लिये जवाबी कार्ड अवश्य हो। वरन् उत्तर की क्षमा।

(४) आज कल 'दयाल' मासिक उर्दू में बड़े अनुपम लेख निकल रहे हैं। जिनकी इच्छा हो मैनेजर दयाल केशोगिरी हैदराबाद दखन से मंगा लें वार्षिक चन्दा ३≡) सालाना है।

(५) भाई श्यामराव जी सन्त महात्माओं के फोटू तय्यार कराकर बेच रहे हैं। जो चाहें वहां से मंगा लें। सूची कीमत सहित हम तरंग ४ में दे चुके हैं। पता उनका मकान नं० ८३४, लाल टीकरी, नाम पल्ली हैदराबाद दखन है।

(६) "मनुष्य बनो हिन्दी" दयाल कम्पाण्ड पेंच जामाजी अलीगढ़ से निकल रहा है। इस मास का नम्बर बड़ा सुन्दर है। शौक़ से मंगाकर पढ़ें।

(७) यदि शिव के पाठक चाहें कि यह काम सुचारू रूप में चले। तो २-२ ग्राहक बनाकर हमारे उत्साह को बढ़ाने की कृपा करें।

(८) देहली में पूज्य दयाल पंडित फ़क़ीर चन्द जी महाराज होशियारपुर से दशहरे के मौक़े पर पधारे थे। सतसंगी लोग मय

अपने बाल बच्चों के कन्नौज, इटारसी, उज्जैन, सैलीगोड़ी, अलीगढ़ ऊंटासानी, खंडेहा और अन्य शहरों से सतसंग को आये थे। दो दफे दिन में सतसङ्ग में देहली शहर की जनता की काफ़ी भीड़ हो जाती थी। रात को भी सतसंगी भाई घेरे रहते थे। २४-२५ २६ अक्टूबर को सतसंग की वह धूम रही जो देखते ही बनती थी। प्रेम की वर्षा हो रही थी। देहली के प्रेमी सतसंगी भाइयों ने बिरला मन्दिर की धर्मशाला में सत संगियों के ठहरने का इन्तज़ाम किया था। स्थान इतना रमणीक था कि घर से भी अधिक सुख वहाँ यात्रियों को मिला। फिर खाने पीने का बंदोबश्त भी बड़ा सराहनीय था। शिव मासिक पत्रिका का परिवार अपना हार्दिक धन्यवाद पेश करता है और मालिक से प्रार्थी है कि आइन्दा देहली के सतसङ्गी भाइयों के उत्साह में इससे भी अधिक वृद्धि हो ! भाई नन्दलाल सचदेव जी, श्री हरस्वरूप जी, भाई प्रभूलाल जी भंडारी, मिस्टर नईयर सा०की सेवायें सराहनीय हैं अन्य सज्जन जिनसे हम परिचित नहीं हैं वे भी धन्यवाद के पात्र हैं। श्रीमान पं० बुआदत्त साहब पीरेमुग़ां ने तो अपने सुरीले भजनों की तान से सतसंगियों के मन को ही मोह कर एक प्रकार से शब्द अभ्यास की ही समाधि का रंग जमा दिया था। फिर एक बुड्ढे बाबा सरदार जी की जूतों की सेवा तो बड़ी ही हृदय बेधक थी। सबका जूता हाथ में लेकर ही पहनाते और चिट देकर रखवाली करते। प्रोफेसर नन्दा सा० ने भी बर्तनों की सफ़ाई मनें करने पर भी की। हम अपनी लेखनी द्वारा सतसंग की महिमा की अधिक प्रशंसा नहीं कर सकते, हमारी शक्ति के बाहर है ! मालिक से फिर प्रार्थना है कि आगे सतसंगी भाईयों का उत्साह और भी अधिक बढ़े ! आमीं !

(१०) हमारा दवा बांटने का संस्कार बहुत दिन से रहा है जिसकी सूचना हम "मनुष्य बनो" पत्रिका के पिछले

अंकों में दे चुके हैं और जिस से कुछ लोगों को फ़ायदा भी हुआ है। हमारे यहाँ निम्नलिखित औषधियां बड़ी आज़मूदा हैं। जिनको ज़रूरत हो वह एक लिफ़ाफे में एक दूसरा लिफ़ाफा दवाई को रख कर मंगा ले। दवा का कोई दाम नहीं लिया जाता।

(१) खांसी पुरानी व दमा (२) प्रसूत का रोग जो स्त्रियों को होता है (३) जिगर तिल्ली कैसा ही पुराना हो (४) सर्मा के रोज़ाना इस्तैमाल से ऐनक तक लगाना छुट जाता है। (५) बाबा रत्नगिरि का फ़ौलाद जो बहुत से रोगों में काम देता है। पूछताछ को जवाबी कार्ड ज़रूरी।

भवदीयः —

लल्ला भईया 'मैनेजर शिव'

(शेष पेज २ की सूची)

तीसरा सीन
(राणा और मीरा)
पाँचवा तमाशा (पहिला सीन)
(मीरा, बढ़े हुये दरिया का किनारा)
दूसरा सीन
(प्रातःकाल दरिया का तट मीरा और ग्वाल बाल)
तीसरा सीन
(वृन्दावन, रूपगुसाँई का मठ, साधु समाज)
छटा तमाशा (पहला सीन)
मेवाड़, राणा का महल, दीवान व कर्म०)
दूसरा सीन
(द्वारका, रंछोड़ जी का मंदिर)
दिल के जज़बे
आशीर्वाद
वन्दना
व्यवस्थापक की डायरी

परमदयाल फ़क़ीर आत्मिक पुस्तकालय

(३)–१६ जाफ़री स्क्वाइर गोल मारकीट के निकट देहली में खोली गई है। इसमें संतों की पुस्तकें विशेषकर महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज की सहस्त्रों पुस्तकें जो उन्होंने लिखी हैं एकत्रित की जा रही हैं। इस शुभ कार्य में पुस्तकें तथा धन देने वाले प्रेमीजन की आवश्यकता है, कार्य बड़े सुचारू रूप से चल रहा है। १००) देकर स्थाई मैंबर बन सकते हैं।यह भी गुरू महाराज की सेवा है। तुरत दान महा कल्याण।

नन्दलाल सचदेव आन० सैक्रेटरी।

(२) 'मनुष्य बनो' मासिक पत्र, हिन्दी दयाल कम्पाउन्ड पेज जामाजी जि० अलीगढ़ से बड़ी सजधज के साथ अद्भुत एवं अनुपम पुस्तकीय रूप में परमदयाल फ़क़ीर चंद जी महाराज की संरक्षता में तथा मुन्शीलाल गोविल के प्रबन्ध से निकल रहा है। वार्षिक मूल्य ३) भेजकर अवश्य मँगाइये।

(३)–दयाल मासिक पत्र उर्दू के जानने वाले महानुभावों के लिए बड़ा उपयोगी पत्र है। इसमें भी महर्षि शिवव्रतलाल जी के सदुपदेश और जगत कल्याण विषयक लेख प्रकाशित होते हैं। नन्दूभाई जी महाराज निज़ामाबाद (दकन) के सम्पादकत्व में बड़ी शान से निकल रहा है। वार्षिक मूल्य ३=) है मैंनेजर दयाल केशवगिरि डा० शाह अली बंडा हैदराबाद (दकन) के पते से मंगा सकते हैं। पढ़ने पर उनके मूल्य का पता चलेगा कि कुछ भी नहीं है।